इतिहास

- प्राचीन
- मध्यकालीन
- आधुनिक

पुरातत्व (Archaelogy)
→ लिखित साक्ष्य ×
खुदाई (Excavation)

इतिहास - लिखित साक्ष्य ✓

पुरातत्व

- पाषाण युग
- ताम्र युग
- कांस्य युग → आयरन/लौह युग

कांस्य युग → हड़प्पा काल

पाषाण युग, ताम्र युग → प्रागैतिहासिक काल → लिखित साक्ष्य ×

कांस्य युग → आद्य ऐतिहासिक काल → लिखित साक्ष्य ✓ (अपठनीय)

पाषाणकाल

(पत्थरों के उपकरणों के आधार पर)

- पुरापाषाण काल (5 लाख - 10,000 BC)
- मध्यपाषाण काल (9000 BC - 4000 BC)
- नवपाषाण काल (7000 BC - 1000 BC)

BC ← → AD (Anno Domini)

CE - Common era

10,000 BC | ईसा मसीह का जन्म

ईसा मसीह के जन्म से पहले | ईसा मसीह के जन्म के बाद

PARMARSSC

पृथ्वी- 4000 m साल पुरानी

→ 4th stage - चतुर्धातुक अवस्था

- प्लीस्टोसीन (10000 BC) तक → हिमयुग
- होलोसीन

शिकारी & भोजनसंग्रह ← **पुरापाषाण काल**

पुरापाषाण = पुराना + पत्थर

- पूर्वपुरापाषाण काल (5 लाख - 50,000 BC)
- मध्यपाषाण काल (50,000 - 40,000 BC)
- उत्तर पुरापाषाण काल (40,000 - 10,000 BC)
  - ↳ प्लीस्टोसीन का अंतिम चरण

पूर्व पुरापाषाण कालीन स्थान :

- सोन/सोहन घाटी → पंजाब
- बेलन घाटी → उत्तर प्रदेश (गुफा/चट्टानीय आवास)
- डिडवाना → राजस्थान
- नेवासा → महाराष्ट्र
- हुन्सगी → कर्नाटक
- पहलगाम → कश्मीर
- पटने → महाराष्ट्र
  - ↳ शुतुरमुर्ग के साक्ष्य सबसे पहले मिले।

PARMAR SSC

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

मध्य पुरापाषाण काल :

फ्लेक (flake) तकनीक पर आधारित

↳ दो पत्थर टकराकर नया धारदार उपकरण बनाना

उत्तरपुरापाषाण काल :

होमोसेपियन की उपस्थिति

भीमबेटका की गुफायें → MP

इनामगाव, नेवाड़ा → महाराष्ट्र

डिड़वाना → राजस्थान

'Flint तकनीक का विकास'

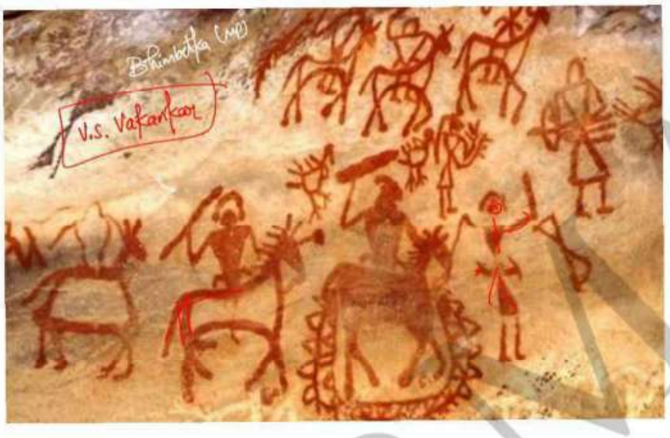

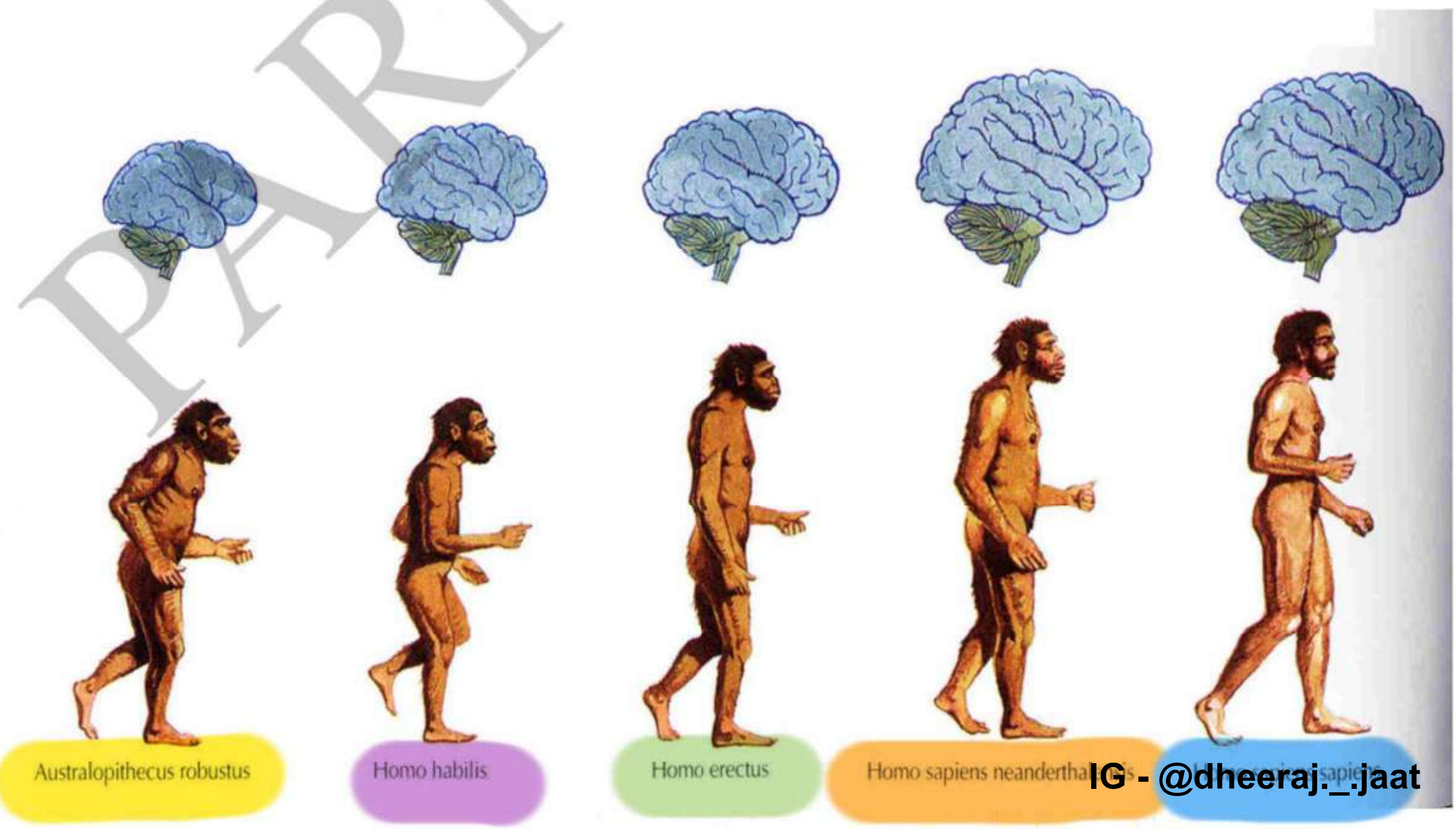

IG - @dheeraj._.jaat

मध्यपाषाण काल

(9000 BC - 4000 BC)

- पुरापाषाण और नवपाषाण युग के बीच का संक्रमणकालीन चरण
- गर्म जलवायु के परिणामस्वरूप वनस्पतियों (flora) और जीवों (fauna) में वृद्धि।

'शिकारी & समुदाय'

- लंघनाज → मेहसाना जिला, गुजरात
- भीमबेटका → मध्यप्रदेश (भोपाल के निकट)
- चोपनीमांडो → UP (इलाहाबाद के निकट बेलन घाटी में)
- बीरभानपुर → पश्चिम बंगाल (बर्दवान जिला)
- बागौर → राजस्थान
- संगनकल्लू → कर्नाटक
- तूतीकोरीन → दक्षिणी तमिलनाडु

- Microliths, छोटे पत्थरों के उपकरणों का प्रयोग।
  - साइट →
    - आदमगढ → MP
    - बागौर → राजस्थान
      - → सबसे पहले जानवरों को पालतू बनाया।

नवपाषाण काल

(7000 BC - 1000 BC)

नवपाषाण = नये पत्थर

- खाद्य उत्पादक
- मेहरगढ - बलूचिस्तान
  - → सबसे पहले गेहूं के साक्ष्य, जौ & कपास के साक्ष्य
  - → घरों के साक्ष्य
- कश्मीर घाटी - ↓ हड्डियों के बने उपकरण & हथियार
  - बुर्जहोम
    - झील के किनारे गड्ढे में निवास
    - श्रीनगर से 16 KM पश्चिम में
    - इंसान के साथ पालतू कुत्तों का शव दफन
  - गुफकराल
    - कुम्हारों की गुफा
    - श्रीनगर के 41 KM दक्षिण-पश्चिम में
    - कृषि & पशुपालन
- बिहार → चिरांद → हड्डियों के उपकरण

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

→ कर्नाटक → संगनकल्लू, ब्रह्मगिरी, मास्की, पिक्लीहल, हल्लूर
(बाजरा की खेती)

→ उत्तरप्रदेश → इलाहाबाद, चावल
चावल की खेती

→ आन्ध्रप्रदेश → भीमा, कृष्णा & तुंगभद्रा नदी के पास
बुदिहाल
उत्नूर → सबसे पुरानी साइट
नागार्जुनकोंडा

→ तमिलनाडु → पय्यामपल्ली & कावेरी

→ बेलनघाटी → कोल्डिहवा & महागरा
↓
सबसे पहले (7000 BC) चावल के साक्ष्य

{ कैटल ह्युक (तुर्किये)
नवपाषाणकालीन शहर }

→ मेघालय → गारो पहाड़ी
→ असम → दाओजली हेडिंग → जेडाइट पत्थर (हरा) पाया गया।

- मिट्टी के बर्तन (Pottery) : लाल & काले
- कला (Art) : भीमबेटका (भोपाल से 45 km दक्षिण)
  ↳ चट्टानों मे चित्रकला (मानवों के चित्र)

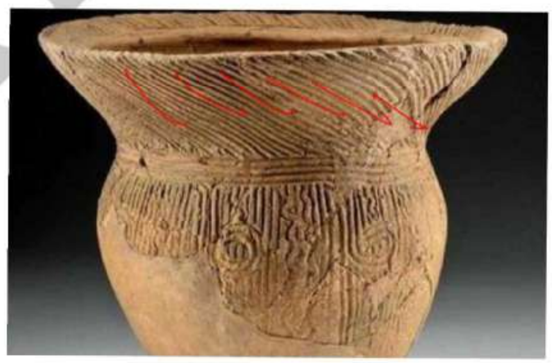

→ नवपाषाणकालीन लोग संपत्ति भी धारण करते थे।

☞ मानवों द्वारा पहली धातु की खोज- **तांबा** (copper)

IG - @dheeraj._.jaat

PARMAR SSC

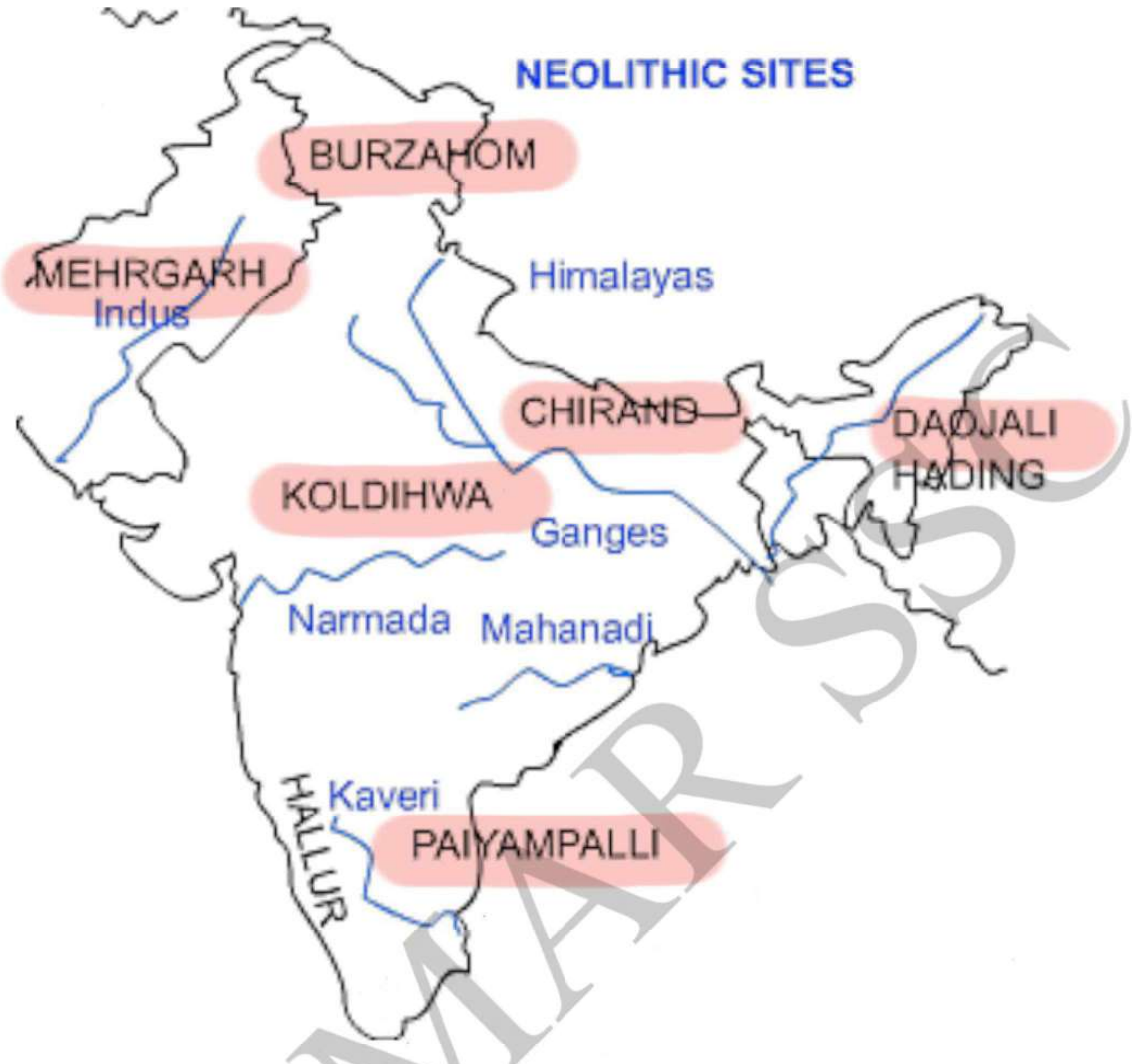

PARMAR SSC

ताम्रयुग (Chalcolithic age)

- → ग्रामीण समुदाय
- → दक्षिण पूर्वी राजस्थान (बनासघाटी) [अहर-(सबसे पहला) / गिलुण्ड

खेत्री खान - राजस्थान
मलजखंड - mP

स्वाल्टा -ताप्तीनदी

- → पूर्वी भारत [चिरांद → गंगानदी
  - बर्धवान जिला, मिदनापुर जिला } WB
- → मध्यप्रदेश → मालवा, कायथा, इरान → कालीसिंध
- → महाराष्ट्र → जोर्वे संस्कृति → प्रवरा (गोदावरी की सहायक), नेवासा, दायमाबाद, चंदोली, इनामगांव, नासिक, नवदाटोली (↑ नर्मदा)

IG - @dheeraj._.jaat

दायमाबाद - सबसे बड़ी साइट (जोर्वे के अंतर्गत)

गनेश्वर - राजस्थान (तांबे के बने बहुत उपकरण मिले)

→ कलश में अस्थियाँ (Urn Burial) पाई गई।

→ पकी ईंटों & घोड़े से अंजान

→ बर्तन (Pottery) { काली & लाल
गेरुआ रंग की भी

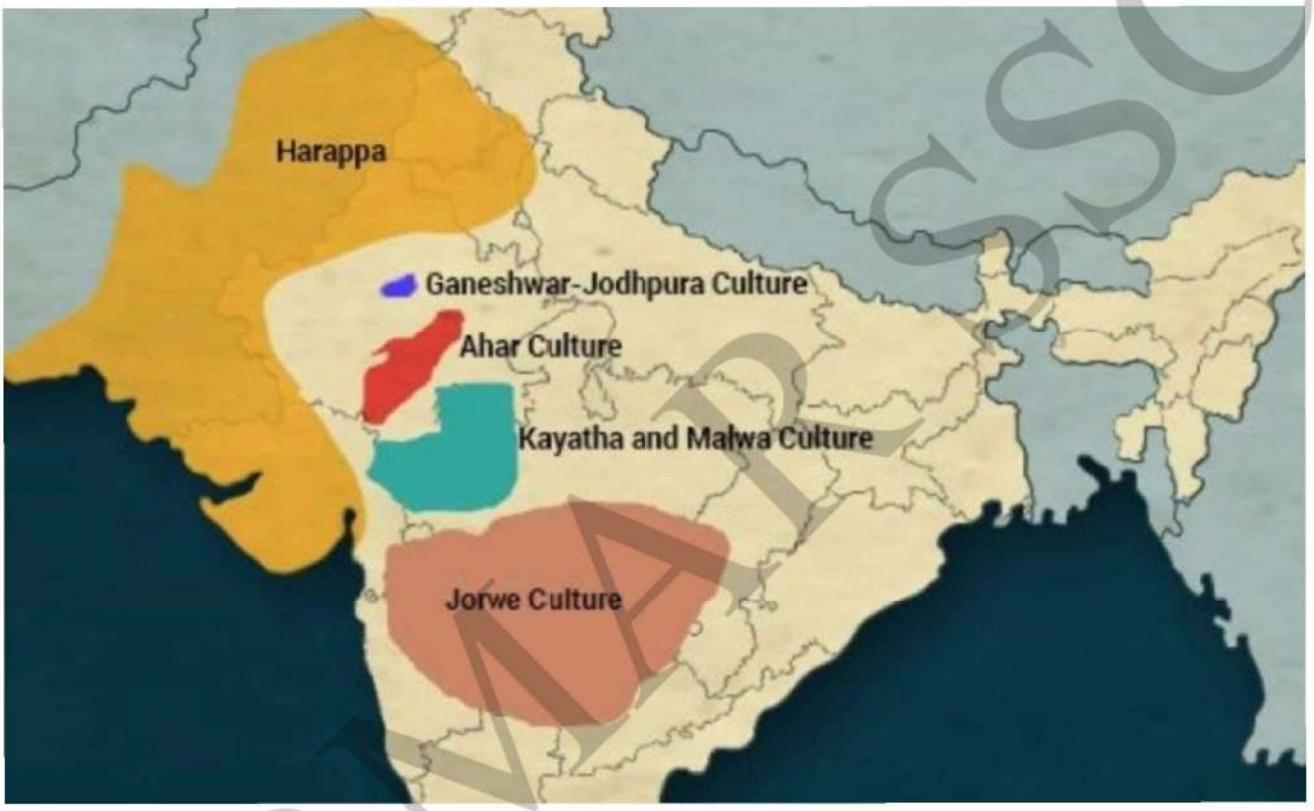

अन्य:

→ इंडिया शब्द सिंधु से आया है जिसे संस्कृत में कहा जाता - सिंधु

→ किस प्रकार के मेगालिथ (कब्र/स्मारक) में पत्थर के टुकड़े कब्र के चारों ओर गोलाकार आकार में स्थापित किये गये थे - केयर्न सर्कल

→ मेगालिथ खड़ा करने की प्रथा लगभग 3000 वर्ष पहले शुरू हुई थी।

→ सेल्ट नवपाषाणकाल का एक औजार है।

→ 'होमो इरेक्टस' की खोपड़ी किस प्रागैतिहासिक भारतीय स्थल में पाई गई थी - हथनोरा (MP)

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

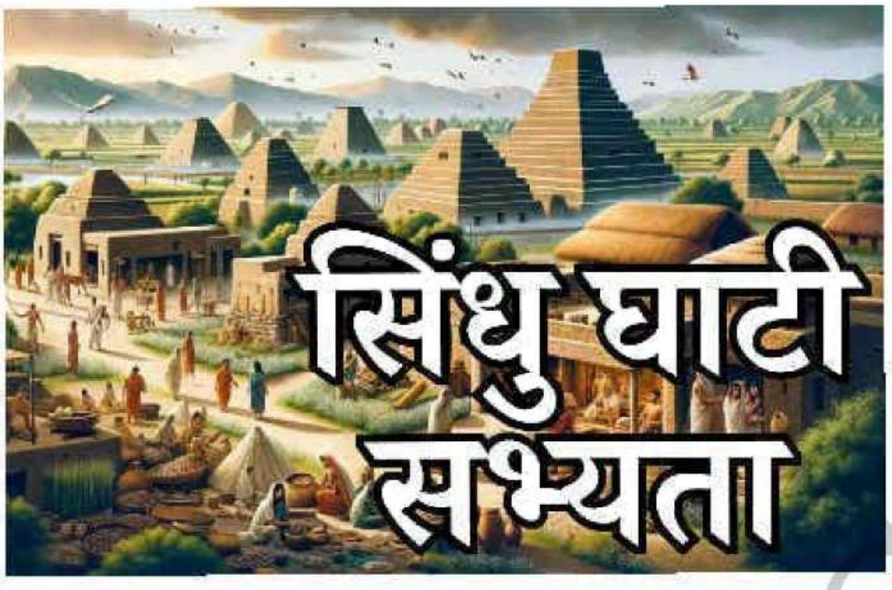

Indus Valley Civilisation OR Harrapan Civilisation

- → **Early Harappan phase- 3000-2600 BCE**
  प्रारंभिक हड़प्पा चरण- 3000-2600 ईसा पूर्व
- → **Mature Harappan phase- 2600-1900 BCE**
  परिपक्व हड़प्पा चरण- 2600-1900 ईसा पूर्व
- → **Late Harappan phase- 1900-1700 BCE**
  उत्तर हड़प्पा चरण - 1900-1700 ई.पू.

PARMAR SSC

→ सिंधु घाटी सभ्यता - कांस्य युग (2600BC-1700BC)

→ सिंधु घाटी सभ्यता का नाम → जॉन मार्शल ने दिया।

→ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के प्रथम अध्यक्ष - अलेक्जेंडर कनिंघम

↑ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के पिता

हड़प्पा - पहला खोजा गया स्थल

{पंजाब, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान, पश्चिमी UP, बलूचिस्तान, सिंध} ← सिंधु घाटी सभ्यता स्थल

(परिपक्व काल - 2600BC- 1900BC)

IG - @dheeraj._.jaat

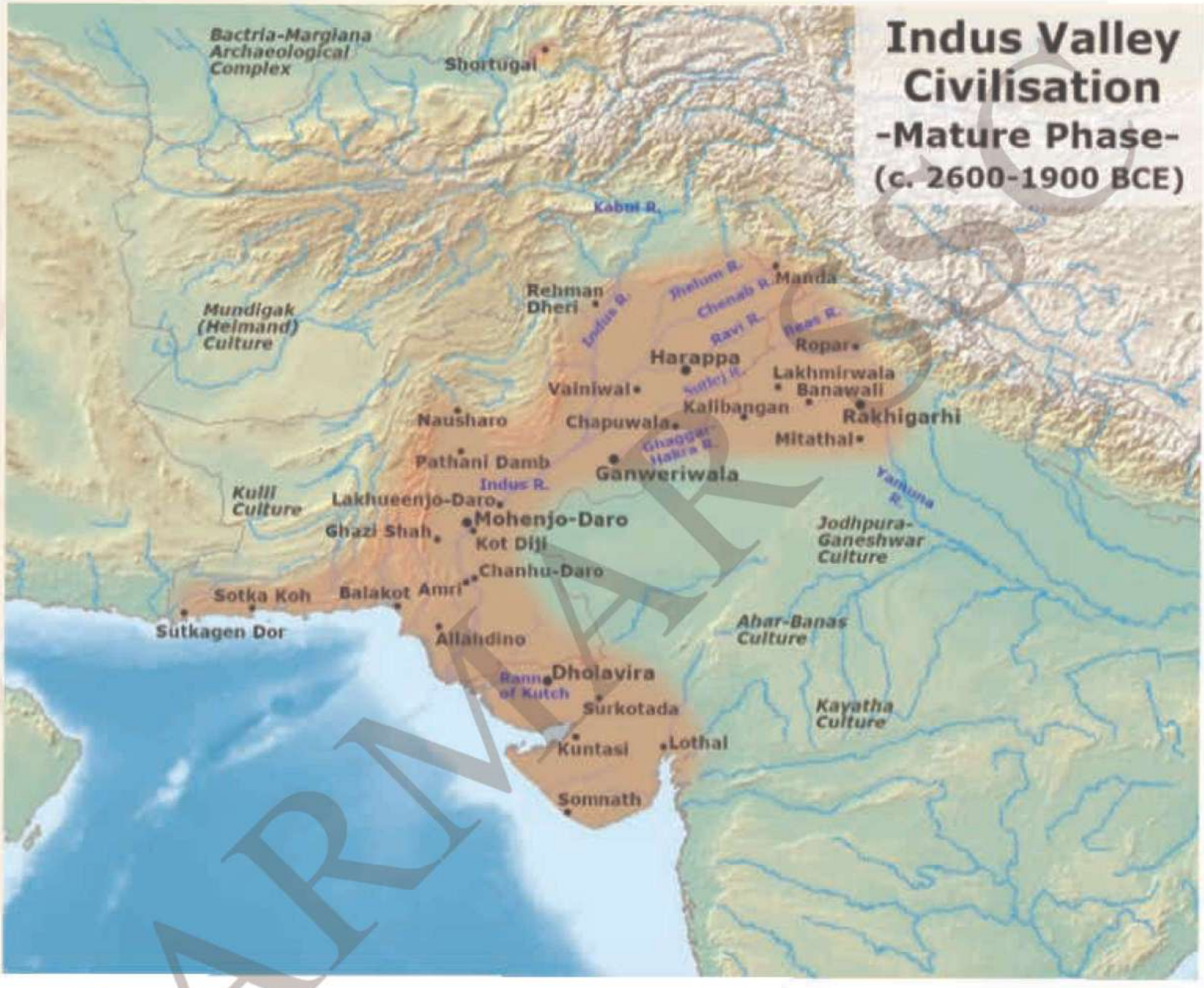

Indus Valley
Civilisation
-Mature Phase-
(c. 2600-1900 BCE)
Bactria-Margiana
Archaeological
Complex
Shortugai
Kabul R.
Mundigak
(Helmand)
Culture
Rehman
Dheri
Indus R.
Jhelum R.
Chenab R.
Manda
Ravi R.
Beas R.
Ropar
Harappa
Sutlej R.
Lakhmirwala
Banawali
Vainiwal
Kalibangan
Rakhigarhi
Nausharo
Chapuwala
Mitathal
Ghaggar-
Hakra R.
Pathani Damb
Ganweriwala
Indus R.
Yamuna
R.
Kulli
Culture
Lakhueenjo-Daro
Mohenjo-Daro
Ghazi Shah
Kot Diji
Jodhpura-
Ganeshwar
Culture
Chanhu-Daro
Sotka Koh
Balakot
Amri
Sutkagen Dor
Allahdino
Ahar-Banas
Culture
Rann
of Kutch
Dholavira
Surkotada
Kayatha
Culture
Kuntasi
Lothal
Somnath

PARMAR SSC

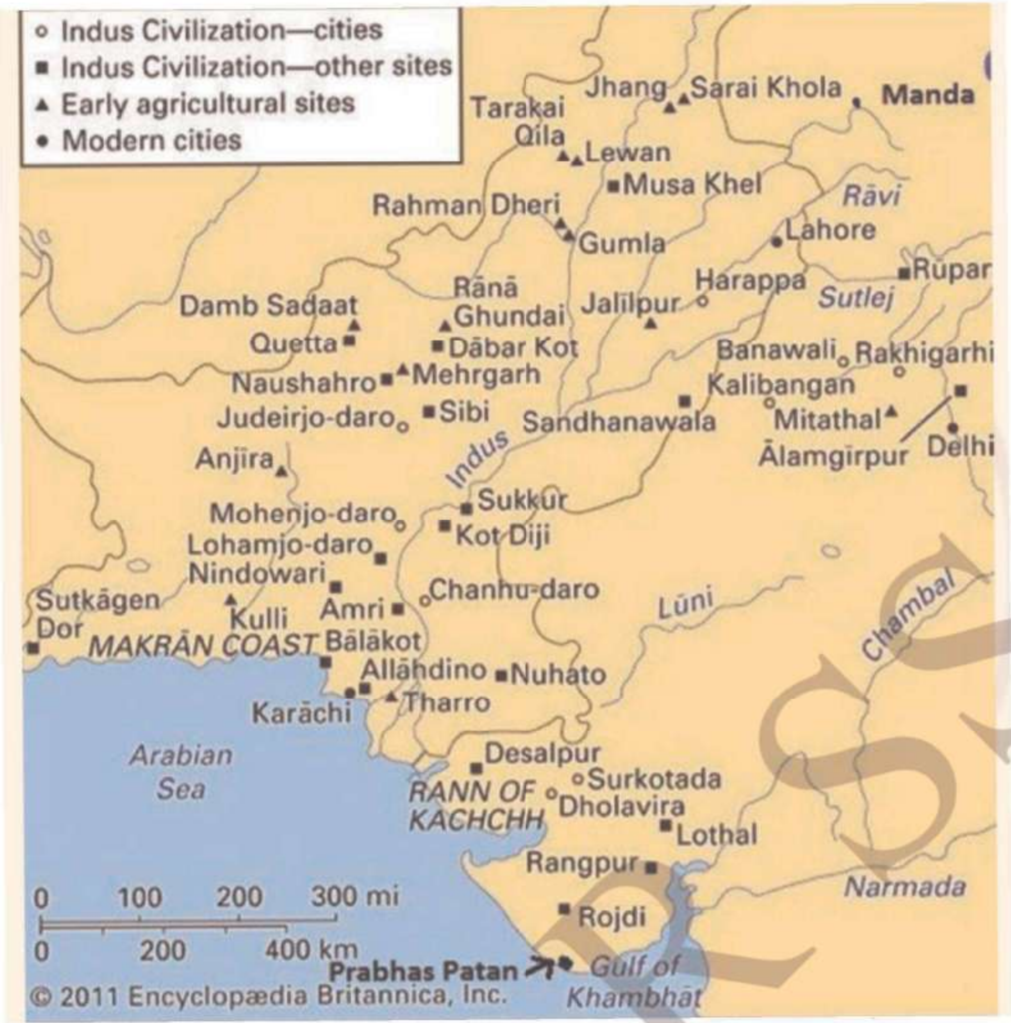

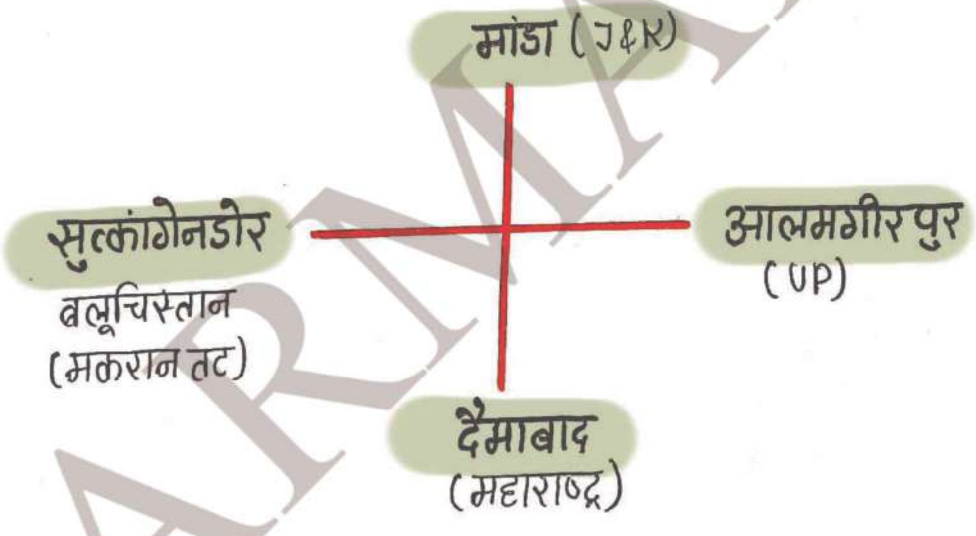

Cu + Sn(टिन) → कांस्य

Cu — राजस्थान से; Sn — अफगानिस्तान से

सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल:

हड़प्पा:
- पंजाब प्रांत में (वर्तमान पाकिस्तान)
- खोज - 'दयाराम साहनी' द्वारा 1921 में
- रावी नदी के तट पर
- 12 अन्नागार (6 एक पंक्ति में)

PARMAR SSC
IG - @dheeraj._.jaat

Early Harappan Sites

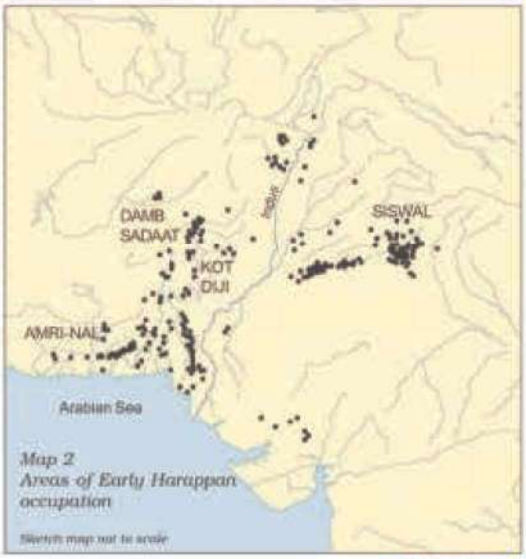

Late Harappan Phase

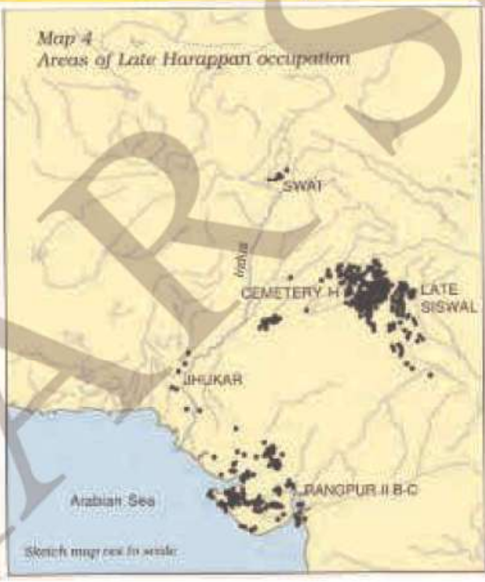

प्रारंभिक हड़प्पा

- विशिष्ट मिट्टी के बर्तन, कृषि और पशुपालन तथा कुछ शिल्प के साक्ष्य
- कोई बड़ी इमारत नहीं
- बी/डब्ल्यू ब्रेक प्रारंभिक हड़प्पा और हड़प्पा सभ्यता
- कुछ स्थलों पर बड़े पैमाने पर जलाने के साक्ष्य तथा कुछ बस्तियों के त्याग के साक्ष्य

उत्तर हड़प्पा

- हड़प्पा सभ्यता की विशिष्ट कलाकृतियाँ (वजन, मुहरें, मोती) गायब हो गईं
- लेखन, लंबी दूरी के व्यापार और शिल्प विशेषज्ञता भी गायब हो गई।
- घर निर्माण तकनीक खराब हो गई
- कोई बड़ी सार्वजनिक संरचना नहीं और ग्रामीण जीवन शैली

IG - @dheeraj._.jaat

हड़प्पा सभ्यता की विशेषताएँ :

1. कृषि
2. पशुपालन
3. नगर नियोजन
4. जल निकासी प्रणाली
5. घरेलू वास्तुकला
6. सामाजिक अंतरों पर नजर रखना
7. शिल्प उत्पादन
8. व्यापार & वाणिज्य
9. धार्मिक अभ्यास
10. मुहर, लिपि, बाट
11. हड़प्पा सभ्यता का अंत

कृषि

- प्रमुख फसलें: गेंहू & जौं, कपास, मसूर, चना, तिल, बाजरा, चावल (दर)
- आहार संबंधी प्रथाएँ- जले हुये अनाज & बीजों से।

कृषि प्रौद्योगिकियां :

- बैल { मुहरों और टेराकोटा पर / जुताई के लिए इस्तेमाल
- हल का टेराकोटा मॉडल- चौलिस्तान & बनावली में पाया गया।
- जुता हुआ खेत- कालीबंगा में
- दो समकोण पर खांचे के सेट बताते हैं कि अलग-अलग फसलें एक साथ उगाई जाती थी।
- नहरें- शोर्तगई / शोर्टुगई (अफगानिस्तान)
- जलाशय- धौलावीरा
- सैंडल क्वर्न- अनाज पीसने के लिए
- तांबे के औजार- कटाई के लिए

PARMAR SSC

कृषि व्यवस्था:

- गेहूँ, ज्वार, मटर, सरसों इत्यादि के साक्ष्य
- खेत जोतने का हल → कालीबंगा से मिला
- ये गबरबन्द (नाला) का प्रयोग करते थे जल एकत्रित करने के लिए।
- चावल के साक्ष्य → लोथल (गुजरात) से
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कपास की खेती करने वाले प्रथम थे।
  - ↳ सिंडन भी बोलते हैं
- भैंस, बकरी, भेड़, सुअर, गधे के साक्ष्य मिलते हैं।
- घोड़े के साक्ष्य → सुत्कांगेनडोर

पशुपालन

- भेड़, बकरी, भैंस, सुअर, बैल जैसी मवेशी
- सुअर, घड़ियाल, हिरण, मछली और मुर्गी की हड्डियाँ भी पाई गई।
- नोट: घोड़े और गाय के साक्ष्य नहीं मिले हैं।

नगर नियोजन

हड़प्पा सभ्यता की सबसे अनोखी विशेषता - शहरी केंद्रों का विकास

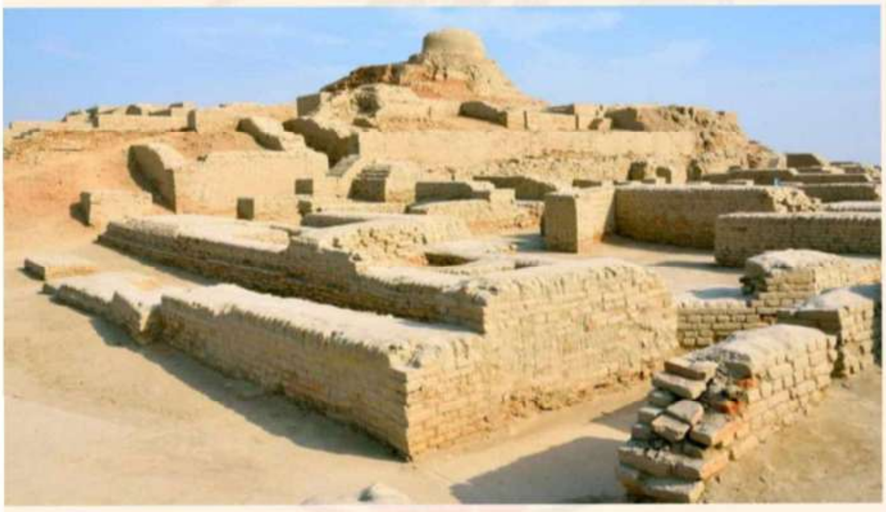

RMAR SSC

गढ़ और निचला शहर:

→ **गढ़:** ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया था।
आकार निचले शहर की अपेक्षा छोटा था।

→ **निचला शहर:** यह शहर के निचले हिस्से में था।
नगर का यह भाग गढ़ से कहीं अधिक बड़ा था।
आवासीय आवास था।

→ चन्हूदड़ो में गढ़ नहीं पाए गए हैं।

→ धौलावीरा- 3 भागो मे विभाजित था।
गढ, मिडल टाउन, निचला शहर

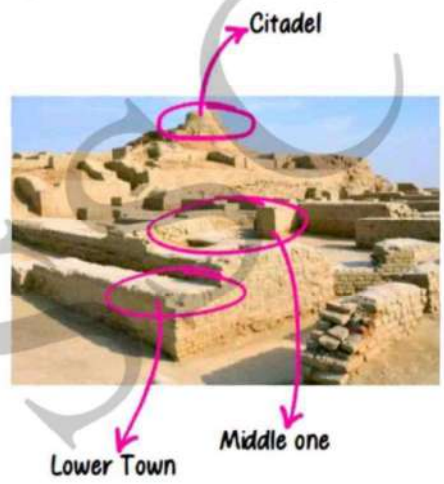

विशाल स्नानागार:

→ मोहनजोदड़ो में मिला।
→ यह गढ़ में स्थित होता था।
→ निर्माण - पक्की ईंटो से किया गया।
→ यह आयताकार बना हुआ था। (11.88 m लम्बा व 7 m चौड़ा)
→ मोटरि और जिप्सम का उपयोग करके जलरोधी

विशाल अन्नागार:

→ मोहनजोदड़ो में पाया गया है।
→ अन्न की कोठरी कहा जाता है।

हड़प्पा का अन्नागार:

→ 12 अन्नागार पाए गए।
→ 6-6 अन्नागार की दो पंक्तियाँ पायी गयी।

IG - @dheeraj._.jaat

अपवाद : धोलावीरा और लोथल

- पूरी बस्ती किलेबंद थी और शहर के भीतर के हिस्से भी दीवारों से अलग थे।
- लोथल के भीतर गढ़ को दीवार से नहीं घेरा गया था, बल्कि उसे ऊंचाई पर बनाया गया था।

नोट: 1. बस्तियों की पहले योजना बनाई गई और फिर उसके अनुसार कार्यान्वयन किया गया।

2. ईंटें: धूप में पकाई गई (मानकीकृत अनुपात , 4:2:1)

जल निकासी प्रणाली

→ ग्रिड पद्धति वाली सड़कें/गलियाँ, जो समकोण पर प्रतिच्छेद करती हैं।
→ नाली प्रणाली बड़े शहरों तथा छोटी बस्तियों में भी पाई जाती थी। (लोथल)
→ जली/ पकी हुई ईंटों से निर्मित।
→ ठोस अपशिष्ट को साफ करने के लिए नालियों के बीच में नाबदान/ सेसपिट था।
→ ढक्कनों के लिए चूना पत्थर का उपयोग किया जाता था।

→ रसोई व स्नानघरों में भी नालियाँ होती थी जो सड़क की नालियों से जुड़ी होती थी। नालियाँ पत्थर की ईंटो से ढकी रहती थी।
→ मैनहोल भी होते थे।

ग्रिड पद्धति :

→ समांतर रेखाओं को प्रतिच्छेद करने का एक नेटवर्क है।
सड़के उत्तर- दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दिशा में चलती थी जिससे एक सुव्यवस्थित लेआउट बनता था।

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

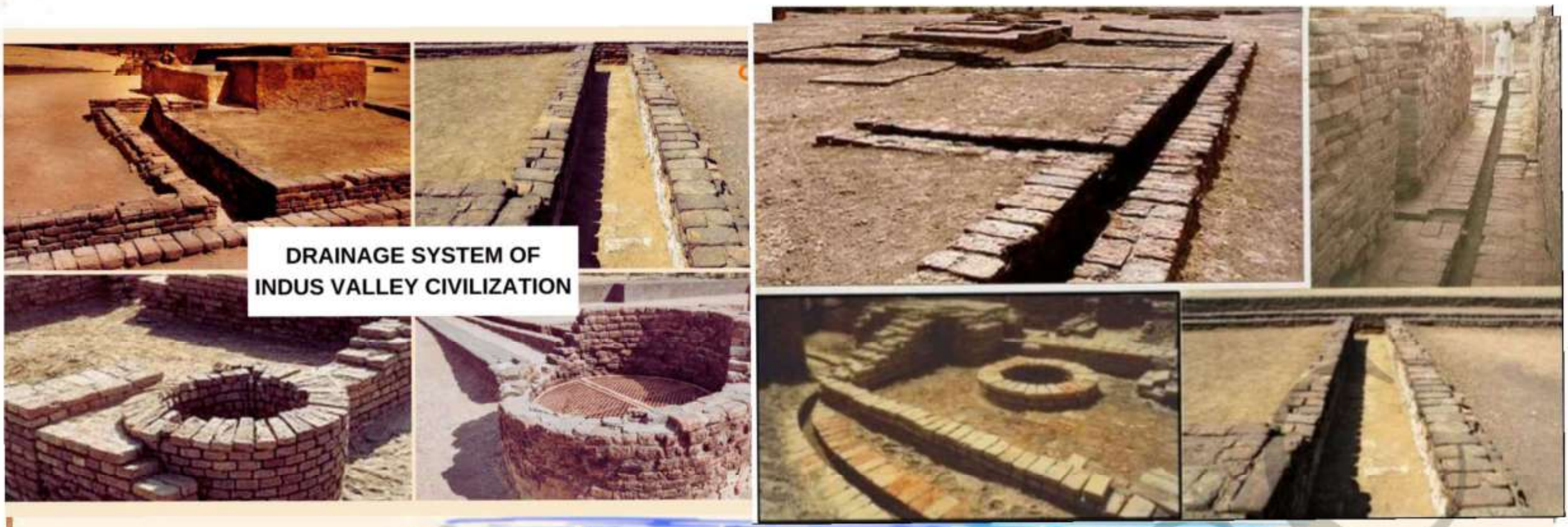

घरेलू वास्तुकला

आवासीय भवन

- हर घर का अपना बाथरूम था
- कई घर एक आंगन के ऊपर केन्द्रित थे, जिसके चारों ओर कमरे थे
- कई घरों में कुएँ थे
- गोपनीयता की चिंता
  - ज़मीनी स्तर पर दीवारों में कोई खिड़की नहीं
  - प्रवेश द्वार से अंदर या आंगन का सीधा दृश्य नहीं दिखता

सामाजिक अंतरों पर नज़र रखना

दफ़न का अध्ययन

- कुछ कब्रों में मिट्टी के बर्तन और आभूषण पाए जाते हैं, ऐसी मान्यता है कि इनका उपयोग मृत्यु के बाद किया जा सकता है
- कुछ उदाहरणों में, मृतकों को तांबे के दर्पणों के साथ दफनाया जाता था।
- पुरुषों और महिलाओं दोनों के शवों के दफन में आभूषण मिले
- हड़प्पावासी मृतकों के साथ कीमती चीजें दफनाने में विश्वास नहीं रखते थे

नोट:- हड़प्पा में एक पुरुष की खोपड़ी के पास तीन शंख की अंगूठियां, एक जैस्पर मनका और सैकड़ों सूक्ष्म मोतियों से युक्त आभूषण पाए गए थे।

IG - @dheeraj._.jaat

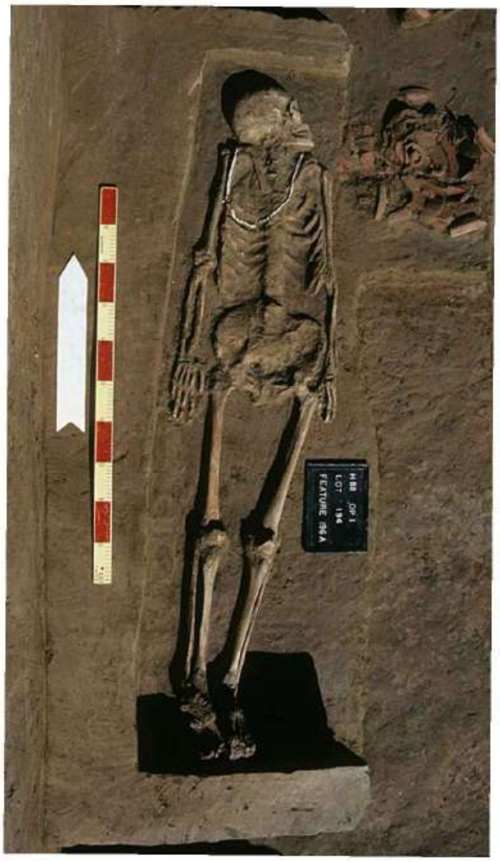

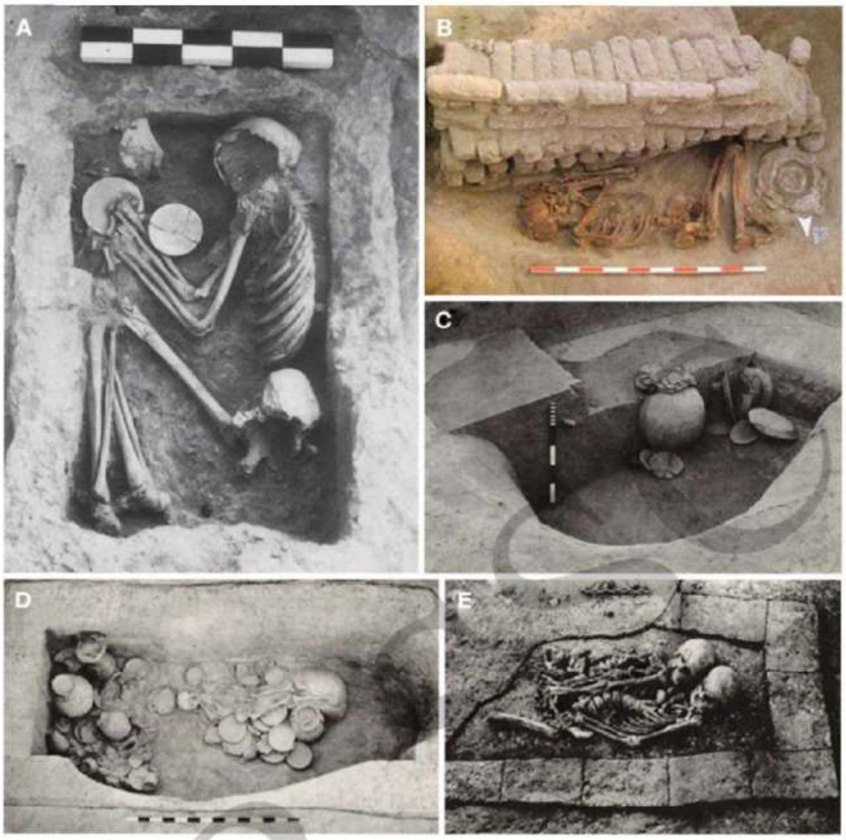

शिल्प उत्पादन

चन्हूदड़ो: शिल्प उत्पादन के लिए समर्पित जिसमें मनका बनाना, शंख काटना, धातु का काम, मुहर बनाना और बजन बनाना शामिल है।

नागेश्वर & बालाकोट: शैल निर्माण के केंद्र (चूड़ियाँ, करछुल, जड़ाई)

चन्हूदड़ो, लोथल & धौलावीरा: विशेष ड्रिल पाए गए।

Ornaments of IVC

तकनीक और शिल्प:

- चरखा के साक्ष्य मिले
- ईंटे बनाने का काम
- नांव बनाने का काम
- आभूषण बनाने का काम (सोना - कर्नाटक से)
- बर्तन बनाने के साक्ष्य मिले। (लाल एवं काले)

PARMAR

IG - @dheeraj._.jaat

व्यापार एवं वाणिज्य

नागेश्वर और बालाकोट	→	शैल
शोरतुगई	→	लैपिस लाजुली
भरूच	→	कार्नेलियन
दक्षिण राजस्थान, उत्तरी गुजरात	→	स्टीटाइट
खेतड़ी और ओमान	→	तांबा
दक्षिण भारत	→	सोना

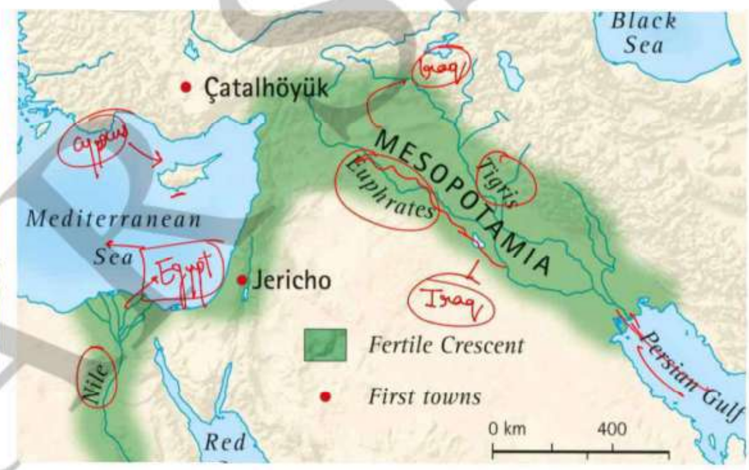

व्यापार:

मुहर → शैलखड़ी, टैराकोटा, एगेट

- मेसोपोटामिया में हड़प्पा की टूटी मुहर मिली है।
- नापतौल के यंत्र मिले। (16 के गुणज में)
- लेन-देन प्रणाली का प्रयुक्त। प्रयोग होता था।
- Lapis Lazuli - नीला पत्थर

दूर देशों से संपर्क:

मेसोपोटामिया के ग्रंथ:

मगन (ओमान) → तांबा

दिलमुन → बहरीन का द्वीप

PARMAR SSC

मेलुहा → हड़प्पा

हाजापक्षी → मोर
मेलुहा → नाविकों की भूमि

मुहर , लिपि , बाट

सील :

- आयताकार → हड़प्पा
- बेलनाकार → मेसोपोटामिया
- गोलाकार → बहरीन

हड़प्पा की मुहरें :

→ स्टेटाइट से बनी।
→ इसमें जानवरों की आकृतियाँ & एक लिपि शामिल हैं।
→ आमतौर पर इसमें लेखन की एक पंक्ति होती है, जिसमें संभवतः मालिक का नाम और शीर्षक होता है।

सील- पशुपति की सील (मुहर) - प्रोटो शिव बैठे हुये है योग मुद्रा में

(B) भैंस (E) हाथी (T) शेर (R) एक सींग वाला गैंडा (D) हिरन

लिपि : चित्रात्मक लिपि
बौस्ट्रोफेडन कहा गया।
(दाँये से बायें फिर बाँये से दाँये फिर दाँये से बाँये)

IG - @dheeraj._jaat

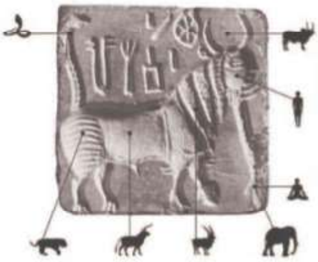

मुहर, लिपि, बाट

कथानक

हड़प्पा लिपि

- वर्णानुक्रम में नहीं
- दाएं से बाएं लिखा गया
- बहुत अधिक संकेत हैं (375-400)
- आभूषण, हड्डी की छड़, मुहरें, तांबे के औजार, जार और एक प्राचीन साइन बोर्ड पर पाया गया
- अधिकांश शिलालेख छोटे हैं और सबसे लंबे शिलालेख में लगभग 26 चिह्न हैं

तौल :

विनिमय को वजन की एक सटीक प्रणाली द्वारा विनियमित किया जाता था, जो आमतौर पर चर्ट नामक पत्थर से बना होता था।

सुक्कुर और रोहरी पहाड़ियाँ : चूना पत्थर और चर्ट ब्लेड का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता था और सिंध में विभिन्न हड़प्पा बस्तियों में भेजा जाता था।

वजन का निम्न मूल्यवर्ग- बाइनरी

वजन का उच्च मूल्यवर्ग- दशमलव

PARMAR SSC

Harappan Weights

राजनीति : व्यापारी वर्ग का शासन होता था।

धार्मिक प्रथाएं :

→ टेराकोटा की मादा मूर्ति मिली है। जिसके भ्रूण से एक पेड़ जन्म ले रहा है।

पृथ्वी की पूजा एक देवी के रूप में।

यूनिकॉर्न - एक सींग वाला जानवर

लिंग - शिव के प्रतीक के रूप में पूजी जाने वाली शंक्वाकार पत्थर की वस्तुएं।

प्राचीन शिव मुहर (पशुपति)

मूर्ति : नृत्य करती हुई लड़की (त्रिभंग मुद्रा में)

10.5m

PARMAR SSC

चन्हूदड़ो :

- मोहनजोदड़ो के दक्षिण में
- खोज- गोपाल मजूमदार ने
- सिंध प्रांत में
- बिना गढ़ वाला शहर

मोहनजोदड़ो :

- सिंध प्रांत में
- सिंधु नदी के तट पर
- खोज- राखलदास बनर्जी (1921 में)
- नृत्य करती युवती की मूर्ति
- दाढ़ी वाला पुरुष (शैलखडी की बनी)
- मां देवी की मिट्टी की मूर्ति मिली।
- विशाल स्नानागार प्राप्त हुआ।
- विशाल अन्नागार प्राप्त हुआ।
- मृतकों का टीला प्राप्त हुआ।
- पशुपति सील मिली।

लोथल :

- गुजरात में
- प्राकृतिक बंदरगाह
- जहाज बनाने का स्थान
- टेराकोटा जहाज
- आग की वेदी
- संयुक्त दफन

कालीबंगा :

- राजस्थान में
- घग्घर नदी के तट पर
- काले कंगन मिले
- जुते हुये खेत के साक्ष्य मिले
- हर घर में कुआं मिला।

सुत्कागेनडोर :

- तटीय शहर मिले
- घोड़े के साक्ष्य मिले।

धौलावीरा :

- गुजरात में
- 3 भाग मे विभाजित (गढ़, मिडल टाउन व निचला शहर)

PARMAR SSC

राखीगढ़ी :
- सबसे बड़ा हड़प्पा स्थल (भारत में)
- टेराकोटा के बने खिलौने मिले
- हरियाणा में

बनावली :
- हरियाणा में
- घग्घर नदी के तट पर
- ग्रिड प्रणाली नही थी।

भिड़ाना :
- सबसे पुराना सिंधु घाटी सभ्यता का स्थल है।

हड़प्पा का पतन

संभावित कारण :

→ जलवायु परिवर्तन
→ वनों की कटाई
→ अत्यधिक बाढ़
→ नदियों का बहना या सूखना
→ भूदृश्य का अत्यधिक उपयोग

शव को दफनाने के तरीके :

- संयुक्त शव / युगल शवाधान → लोथल से प्राप्त
- ताबूत दफन (Coffin) → हड़प्पा से प्राप्त
- शव के साथ कुत्ते का शव → रोपड़ से
- विस्तारित अंत्येष्टि → सनौली (UP) मे

PARMAR SSC

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

वैदिक सभ्यता

1500-600BC

पूर्व वैदिक काल	उत्तर वैदिक काल
1500-1000 BC	1000-600BC

- द आर्कटिक होम ऑफ वेदाज (पुस्तक) → बाल गंगाधर तिलक
- इसी समय वेदों का संकलन हुआ इसलिए इसे वैदिक सभ्यता कहते है।

इंडो आर्यन सिद्धांत: आर्यों का निवास स्थान मध्य एशिया माना गया है।

वैदिक ग्रंथो की रचना = इंडो-आर्यों ने की

↳ सभी भारतीय आर्य जाति से संबंधित है।

बोगजकोई शिलालेख: 4 वैदिक देवताओं व उनके जन्म स्थल के बारे मे तुर्की में खोजा गया था।

- भाषा के आधार पर - कुछ शब्द जो समान है-
  (यूरोप & भारत के शब्दकोश में) → भ्राता, सप्त, अंदर

वेद: → सबसे पुराने ग्रंथ → इसी समय का ज़ेंद अवेस्ता (ईरान का ग्रंथ) पारसी समुदाय का

वेद = ज्ञान

→ श्रुति

→ अपौरुषेय
(मानव द्वारा निर्मित X)
(ईश्वर का उपहार)

वेदो के उपखंड:

- संहिता → मंत्रो का संग्रह
- ब्राह्मण → अनुष्ठान, समारोह, बलिदान
- आरण्यक → तपस्वी, जंगल
- उपनिषद → दर्शन और आध्यात्मिक ज्ञान
  ↳ वेदांत भी कहते है।

108 उपनिषद (परंपरागत)
मुख्य - 10

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

सभी वेदों का आखिरी पाठ - ब्राह्मण

वेदों के प्रकार :

ऋग्वेद :
- सबसे बड़ा और पुराना वेद है।
- 10 मण्डल व 1028 सूक्त है।
- 10600 छंद है।

- वैदिक मंत्रों का आख्यान करने वाले और कर्मकाण्ड करने वाले पुरोहित को होतृ कहा जाता था।
- चार देवताओं के बारे में → इंद्र, अग्नि, विष्णु, वरुण

गायत्री मंत्र → 3वें मंडल में → विश्वामित्र द्वारा
↳ मंत्र की संख्या = 24

10 वें मण्डल में → पुरुषसूक्त → 4 वर्णों का उल्लेख है।
- ब्राह्मण (मुख)
- क्षत्रिय (भुजा)
- वैश्य (जांघ)
- शूद्र (पैर)

9 वें मण्डल में → भगवान सोम → पेड़ - पौधों का देवता
सोमरस

→ 2 से 7 तक मण्डल पहले बने थे जबकि 1, 8, 9, 10 वां बाद में बना।

सामवेद :
- संगीत की सबसे पुरानी पुस्तक
- 2 उपनिषद है
  - छन्दोग्य उपनिषद
  - केन उपनिषद
- सामवेद का गायन करने वाला पुरोहित → उद्‌गातृ

यजुर्वेद :
- मंत्रों का संग्रह
- 2 भागों में विभाजित
  - शुक्ल यजुर्वेद
  - कृष्ण यजुर्वेद

IG - @dheeraj._.jaat

- शतपथ ब्राह्मण भी इसी में दिया गया है।
- प्रमुख उपनिषद
  - बृहदारण्यक उपनिषद (सबसे पुराना)
  - कठोपनिषद (नचिकेता की कहानी)

अथर्ववेद :
- 20 खण्ड में विभाजित है।
- सबसे नया वेद है।
- इसमें जादू-टोना और तन्त्र-मंत्र का उल्लेख है।
- प्रमुख उपनिषद
  - मुण्डकोपनिषद → सत्यमेव जयते का उल्लेख
  - महाउपनिषद → वसुधैव कुटुम्बकम् का उल्लेख
- पुरोहित = ब्रह्मा

भारतीय दर्शन – परंपरावादी

सांख्य दर्शन → कपिल मुनि
न्याय दर्शन → गौतम
वैशेषिक दर्शन → ऋषि कणाद
योग दर्शन → पतंजलि
उत्तर मीमांसा (वेदांत) → बदरायण (उपनिषदों का दार्शनिक शिक्षण)
पूर्व मीमांसा → जैमिनी

वेदांग : वेद को समझने के लिये वेदांग है।
कुल 6 वेदांग है।

शिक्षा → ध्वनि का अध्ययन
कल्प → अभ्यास का अध्ययन
व्याकरण → व्याकरण का अध्ययन
निरुक्त → व्युत्पत्ति का अध्ययन (शब्दों का ज्ञान)
ज्योतिष → प्रकाश का अध्ययन
छन्द → काव्य का अध्ययन

PARMAR SSC

पूर्व वैदिक काल:
- ऋग्वैदिक काल भी कहा जाता था।
- ऋग्वेद से पता चलता है।

हिमवंत → हिमालय
मुंजावत → हिन्दुकुश

- ये लोग सप्त सिंधु में रहते थे।

सिंधु	→	सिंधु
झेलम	→	वितस्ता
चिनाब	→	अस्किनी
व्यास	→	विपासा
रावी	→	परुष्णी
सतलज	→	शुतुद्री
सरस्वती	→	सरस्वती

- **दशराजन युद्ध** → रावी नदी के किनारे
[भरत कबीले (राजा सुदास व सात कबीले)
(नेता पुरुष कबीले का राजा) के बीच]

समाज: 4 वर्णों में विभाजित था-
1. ब्राह्मण
2. क्षत्रिय
3. वैश्य
4. शूद्र

} कामके आधार पर

- बाल विवाह प्रचलन में नहीं था।
- विधवा पुनर्विवाह होते थे।
- [नियोग- विधवा पति के छोटे भाई से शादी करती थी।]
- पितृसत्तात्मक समाज था।
- गाय को पवित्र व अमूल्य संपत्ति माना गया।
  ↳ अघन्य कहा गया

गोमत → धनी व्यक्ति

राजनीति: राजतन्त्र शासन प्रणाली थी
1. **सभा** - कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों का समुदाय।
2. **समिति** - आम लोगों का समुदाय।
3. **विद्यत / विद्याता** - धार्मिक उद्देश्य के लिए।

IG - @dheeraj._.jaat
PARMAR SSC

सेनानी - सेना प्रमुख

ग्रामिणी - गांव प्रमुख

पुरोहित - पुजारी

धर्म : प्रकृति की पूजा करते थे।

इंद्र - (पुरंदर) → सबसे अधिक बार नाम आया है।

पृथ्वी

अग्नि - (भगवान व मनुष्यों के बीच कड़ी)

सोम

वायु

रुद्र - (पशुओं का देवता)

अदिति - देवताओं का माँ

सावित्री - गायत्री मंत्र इन्ही को समर्पित था।

- पशु पूजा X

बाली - राजा को स्वैच्छिक भेंट

- गेरु रंग के मिट्टी के बर्तन पाए गए है।
- आर्य ग्रंथो की भाषा - संस्कृत
- ऋग्वेद में ऋषि विश्वामित्र और देवी के रूप मे पूजी जाने वाली दो नदियाँ व्यास और सतलज के बीच संवाद के रूप में एक भजन है।
- 1800-1500 ई० पू० की 30 ऋग्वेद पांडुलिपियो को UNESCO के memory of the world register में 2007 में शामिल किया गया।

उत्तर वैदिक काल (1000BC-600BC)

आर्यों ने अब अपना निवास स्थल पंजाब से पश्चिमी UP गंगा-यमुना दोआब तक विस्तारित कर लिया।

ऊपरी हिस्से में → कुरु
निचले हिस्से में → पांचाल
} मिलकर हस्तिनापुर राजधानी बनायी

कुरु कबीला < पांडव, कौरव

PARMAR SSC

{ महाभारत हुआ - 950 ई०पू०
जबकि महाभारत ग्रन्थ - 400 वीं शताब्दी मे लिखा।

- उत्तर वैदिक काल में और आगे आर्यों ने दोआब से पूर्वी उत्तर प्रदेश तक क्षेत्र विस्तारित कर लिया।
  - ↓ लोहे के हथियार + घोड़ी की वजह से संभव हुआ
    - ↳ कृष्णा/ श्याम प्रकार का लोहा

कृषि : राजा भी खेतों में शारीरिक श्रम करते थे।
- → Vrihi - चावल
- → लकड़ी के हल (ग्रामीण इलाके में)

राजनीतिक व्यवस्था : केन्द्रीयकृत
- सभा - औरतो को बैठने की अनुमति नहीं थी।
- समिति
- विदथ

समाज : • वर्ण मे विभाजित था।
- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
  - वैश्य ↓ व्यापार
  - शूद्र ↓ नौकर

- महिलाओ की स्थिति अच्छी नही थी।
- गोत्र प्रणाली का उदय हुआ।
- 4 आश्रम में विभाजित - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास

1. अनुलोम विवाह → लड़का ऊँची जाति का + लड़की नीची जाति की
2. प्रतिलोम विवाह - उच्च जाति की लड़की + नीची जाति का लडका

PARMAR SSC

8 प्रकार के विवाह

ब्रह्म विवाह →	वैदिक रीति से समान वर्ण में विवाह
गन्धर्व विवाह →	प्रेम विवाह
दैव विवाह →	पिता ने दक्षिणा में पुजारी को दान की अपनी बेटी।
अर्ष विवाह →	एक गाय & एक बैल का प्रतीकात्मक वधू मूल्य दिया गया।
प्रजापति विवाह →	दहेज रहित विवाह
असुर विवाह →	खरीदकर विवाह
राक्षस विवाह →	अपहरण द्वारा विवाह
पिशाच विवाह →	इस विवाह में, जो लड़की अपने होश में नहीं होती, उसका जबरदस्ती विवाह कर दिया जाता है।

One Liners

→ आर्यों की भाषा - संस्कृत

→ ऋग्वेद में ऋषि विश्वामित्र और दो नदियों के बीच संवाद के रूप में एक स्त्रोत जिन्हें देवी के रूप में पूजा जाता है। ↳ ब्यास & सतलज

→ किसी व्यक्ति का वैदिक दृष्टिकोण और समाज के साथ उसका संबंध जीवन के चार लक्ष्यों से निर्धारित होता है - अर्थ, मोक्ष, धर्म, काम

→ रामायण में रत्नाकर का दूसरा नाम था - वाल्मीकि

→ वैदिक युग में एक समय राजा को 'गोपति' कहा जाता था जिसका अर्थ था - मवेशियों का स्वामी।

→ 'अनुष्ठान' को दर्शाने वाला शब्द - कल्प

→ ऋषि व्यास ने पुराणों और महाभारत का संकलन किया

PARMAR SSC

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

बौद्ध धर्म & जैन धर्म

उत्पत्ति के कारण :

- ब्राह्मणवादी वर्चस्व
- कृषि अर्थव्यवस्था → जानवरो की बलि के कारण कृषि प्रभावित
- पंच-चिन्हित सिक्को का प्रयोग → व्यापार मे वृद्धि → वैश्यो द्वारा

(जैन & बौद्ध धर्म मे सभी वर्णों के साथ समान व्यवहार)
(वर्ण जन्म के जगह कर्म के आधार पर)

- अहिंसा पर विश्वास

जैन धर्म

महान शिक्षक - तीर्थंकर → 24

- पहले - ऋषभ देव → अयोध्या → बैल
- 23 वें - पार्श्वनाथ → वाराणसी → सर्प
- 24 वें - वर्धमान महावीर → वैशाली → शेर
  - ↳ वास्तविक संस्थापक

⊙ वेदो मे केवल 2 तीर्थंकरो का उल्लेख
- ऋषभदेव (पहले)
- अरिष्टानेमी (22 वें)

वर्धमान महावीर :

जन्म → 540 BC (लगभग), कुण्डग्राम (वैशाली, बिहार)
मृत्यु (मोक्ष) → 468 BC (72 वर्ष मे), पावापुरी (बिहारशरीफ, बिहार)
पिता → सिद्धार्थ (ज्ञातक कुल से - क्षत्रिय)
माता → त्रिशला
पत्नि → यशोदा
पुत्री → अनोज्जा प्रियदर्शिनी → पति जमालि → महावीर के प्रथम अनुयायी

PARMAR SSC

गृह त्याग → 30 वर्ष की अवस्था में → मक्खली गोसाल
↓
आजीवक सम्प्रदाय

ज्ञान प्राप्त → 42 वर्ष की अवस्था में, साल वृक्ष के नीचे ऋजुपालिका नदी के तट पर
↳ कैवल्य

केवलिन - पूर्ण ज्ञान
जितेन्द्रिय - इन्द्रियों पर विजय पाने वाला

प्रथम उपदेश - पावा

बसादिस - जैन मठ (दक्षिण भारत)

जैन दर्शन

मोक्ष - 3 उपदेश
- सम्यक ज्ञान
- सम्यक आचरण
- सम्यक दर्शन

जीवन के 5 सिद्धांत:

अणुव्रत

- अहिंसा → हिंसा न करना
- सत्य → सत्य बोलना
- अस्तेय → चोरी न करना
- ब्रह्मचर्य → ब्रह्मचर्य का पालन करना
- अपरिग्रह → भौतिक सुख से दूर रहना

जैन विभाजन

चंद्रगुप्त मौर्य & भद्रबाहु

उत्तर भारत मे अकाल के कारण दक्षिण भारत (कर्नाटक) चले गये।
↳ 303 BC

संलेखना व्रत से प्राण त्याग

कर्नाटक, श्रवणबेलगोला

भद्रबाहु → दिगम्बर

स्थूलभद्र - अकाल मे भी उत्तर भारत मे ही रहें।
श्वेत (सफेद) वस्त्र धारण किये (श्वेताम्बर)

प्रथम जैन संगीति -

298 BC, 12 अंग संकलित
संरक्षण - बिंदुसार (चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र)

PARMAR SSC

द्वितीय जैन संगीति - 512 ई०, वल्लभी (गुजरात)

जैन साहित्य - प्राकृत भाषा में

वास्तुकला :

- रॉककट गुफा मंदिर → हाथीगुंफा गुफायें → खारवेल, उड़ीसा
  - उदयगिरी & खण्डगिरी गुफायें → ओडिसा
- दिलवाड़ा जैन मंदिर → माउण्टआबू, राजस्थान
  - ↳ वास्तुपाल बंधुओं द्वारा निर्माण
- गोमतेश्वर / बाहुबली की प्रतिमा → श्रवणबेलगोला, कर्नाटक (महामत्स्यअभिषेक)
  - ↳ ऋषभदेव के पुत्र

अनुयायी :

- चन्द्रगुप्त मौर्य & पुत्र बिंदुसार
- बिम्बिसार (महावीर स्वामी & गौतम बुद्ध के समकालीन) & पुत्र अजातशत्रु

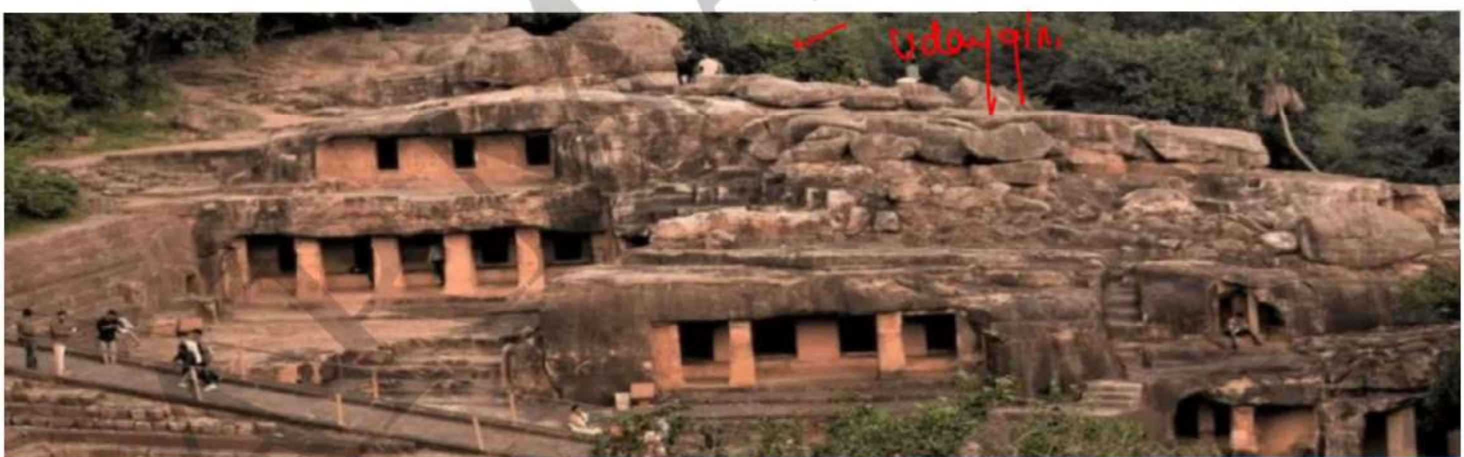

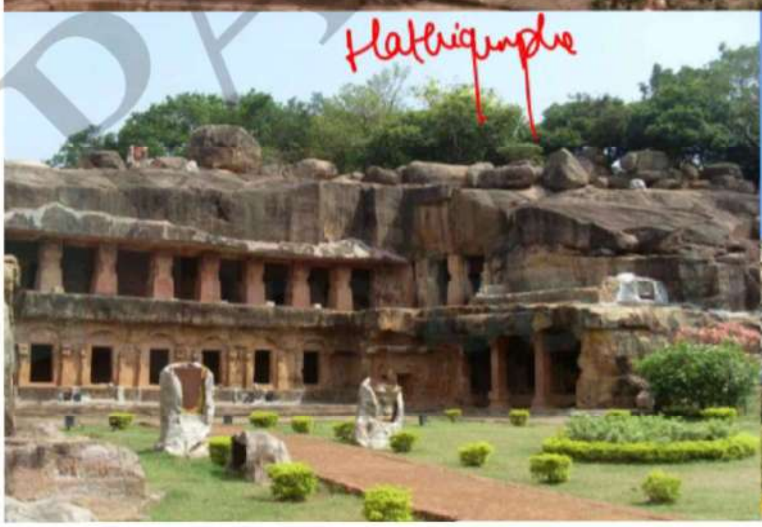

Jain Temple

Architecture

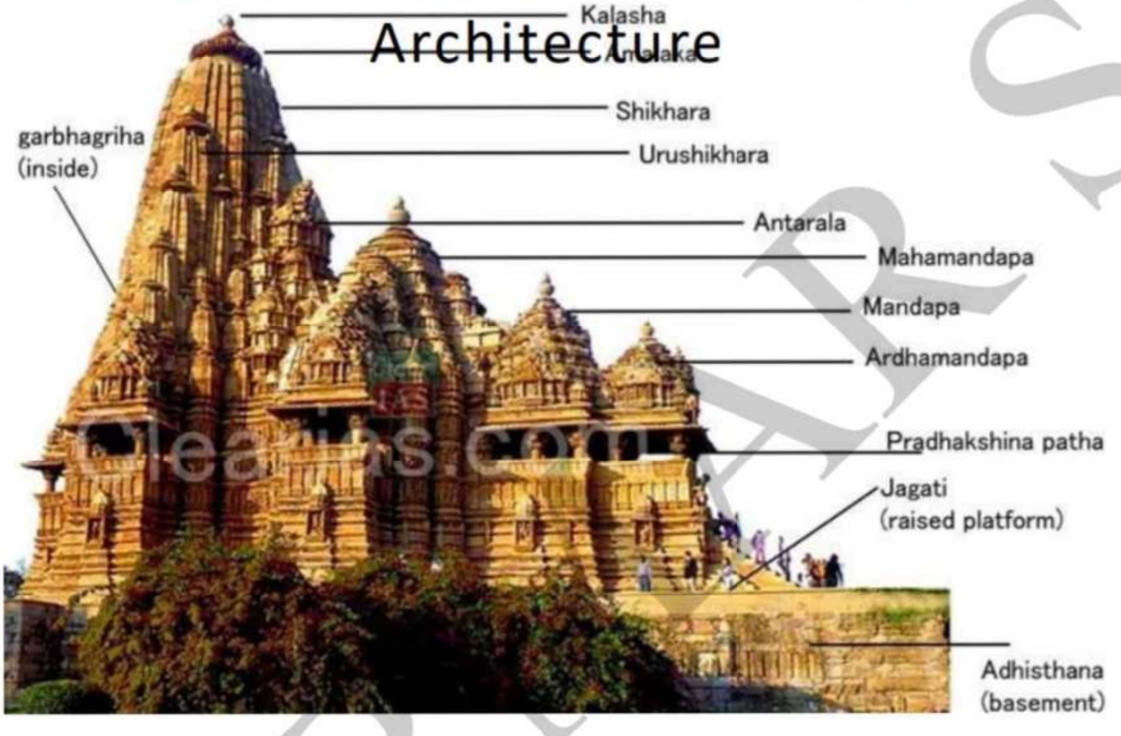

Temples

Dilwara Jain Temple

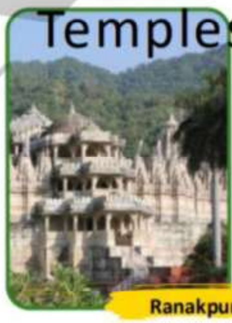
Ranakpur Temple

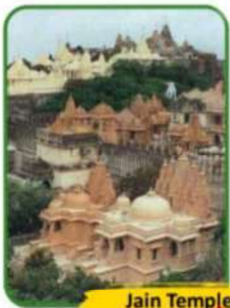
Jain Temple Guja

Mt Mangi Tungi

Shikar Ji (JHARKHAND)

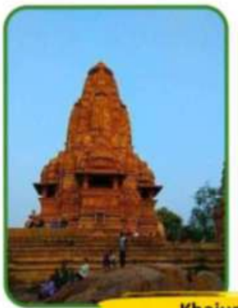
Khajuraho

Other Jain Architecture

Ellora Caves (Maharashtra)

Sittanavasal Caves (Tamil Nadu)

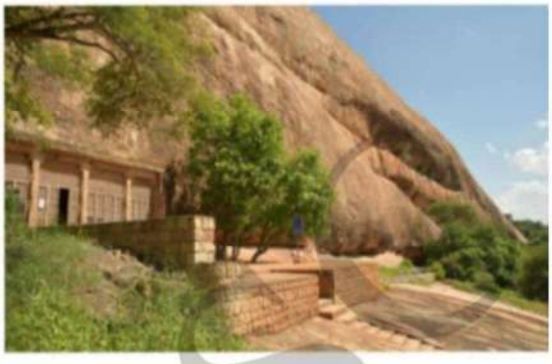

Jain ✓
Budhist ✓
Hinduist ✓

Udaygiri Caves (Odisha)

" बौद्ध धर्म "

गौतम बुद्ध : → शाक्य वंश से, क्षत्रीय

- जन्म → 563 BC, लुम्बिनी, नेपाल
- मृत्यु → 483 BC, कुशीनगर
- बचपन का नाम → सिद्धार्थ
- पिता → शुद्धोधन
- माता → महामाया
- सौतेली मां/मौसी → महाप्रजापति गौतमी ↓ प्रथम भिक्षुणी

- पत्नि → यशोधरा
- बेटा → राहुल
- गृहत्याग → 30 वर्ष में
- शिक्षक { 1st → अलारकलाम; 2nd → उद्दकरामपुत्र }
- ज्ञानप्राप्ति → बोधिवृक्ष के नीचे, उरुवेला (बोधगया, बिहार) निरंजना नदी के निकट

प्रथम उपदेश- सारनाथ, वाराणसी

PARMAR SSC

बुद्ध के जीवन के महत्वपूर्ण प्रतीक :

कमल	→	जन्म का प्रतीक		
घोड़ा	→	गृहत्याग	→	महाभिनिष्क्रमण
बोधिवृक्ष	→	ज्ञानप्राप्ति	→	निर्वाण
पहिया	→	पहला उपदेश	→	धर्मचक्रप्रवर्तन
स्तूप	→	मृत्यु	→	महापरिनिर्वाण

Lotus

Birth

Horse

House Renunciation
(Mahabhinishkramana)

Bodhi Tree

Enlightenment
(Nirvana)

Wheel

1st Sermon
Dharmachakrapravartana

{ घोड़ा - कंथक
{ रथ - चन्ना

Stupa

Death
(Parinirvana)

4 आर्यसत्य :

1. दुख का सत्य
2. दुख के कारण का सत्य
3. दुख के अंत का सत्य
4. दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग का सत्य

Four Noble Truths

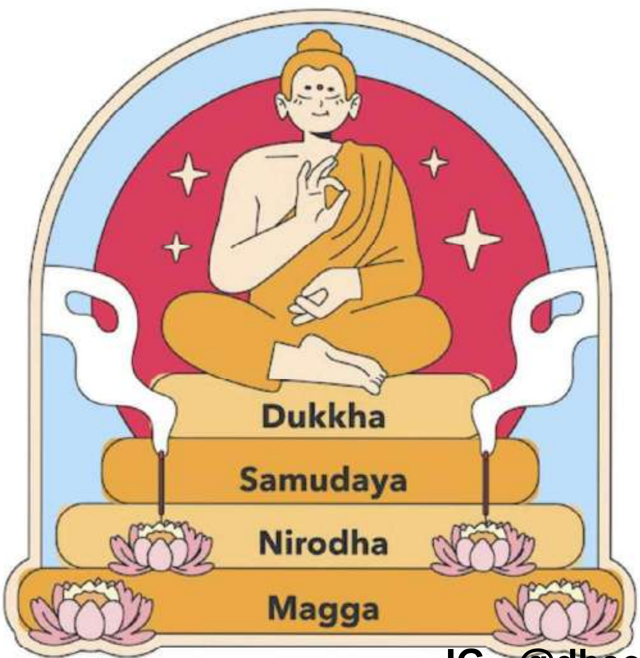

PARMAR SSC

अष्टांगिक मार्ग :

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाक्
4. सम्यक कर्म
5. सम्यक् जीविका
6. सम्यक व्यायाम
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समादि

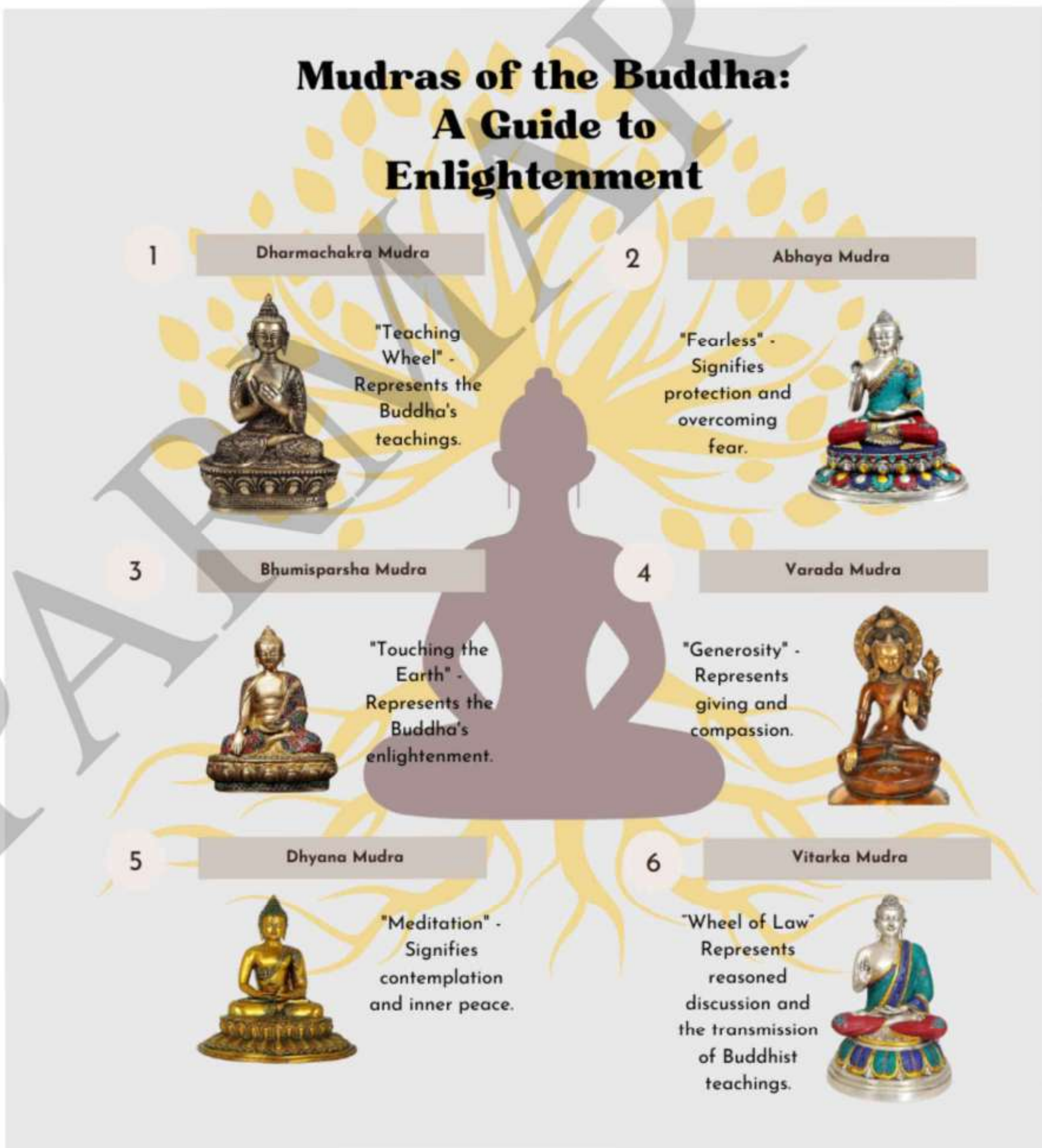

PARMAR SSC

बौद्ध संगीति

पहली	राजगृह	483 BC	अजातशत्रु	महाकश्यप
दूसरी	वैशाली	383 BC	कालाशोक	सबकामी
तीसरी	पाटलीपुत्र	250 BC	अशोक	मोग्लीपुत्त तिस्स
चौथी	कुण्डलवन (कश्मीर)	72 AD	कनिष्क	वसुमित्र

→ बौद्ध धर्म का विभाजन

बौद्ध धर्म

हीनयान

मूर्तिपूजा में अविश्वास

साहित्य - पाली भाषा में

महायान

मूर्तिपूजा में विश्वास

साहित्य - संस्कृत में

बोधिसत्व - वज्रपाणि, अवलोकितेश्वर, अमिताभ

बौद्ध ग्रंथ:

पाली में → त्रिपिटक

- सुत्तपिटक - बुद्ध की शिक्षायें
- विनयपिटक - मठ के नियम
- अभिधम्मपिटक - सुत्तपिटक की व्याख्या

मिलिन्दपन्हो (पाली) → मिलिन्द (मिनांडर) & नागसेन संवाद

बुद्धचरित (संस्कृत) → अश्वघोष द्वारा रचित

जातक कथाएं → बुद्ध के पिछले जन्मों की कहानियाँ

वज्रयान - तांत्रिकविद्या मे विश्वास

PARMAR SSC

बौद्ध पद:

- चैत्य → पूजा गृह
- विहार → निवास स्थान
- धम्म → धर्म
- स्तूप → मृत्यु

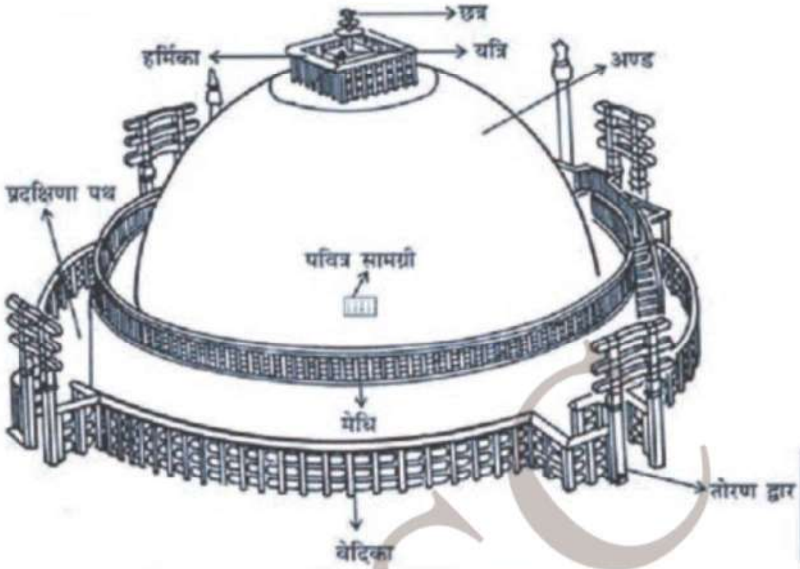

- सबसे बड़ा स्तूप - केसरिया, बिहार
- धमेक स्तूप - सारनाथ, UP
- रामभर स्तूप - कुशीनगर, UP
- सांची स्तूप - MP
- बोरोबुदुर स्तूप - इण्डोनेशिया

केसरिया स्तूप

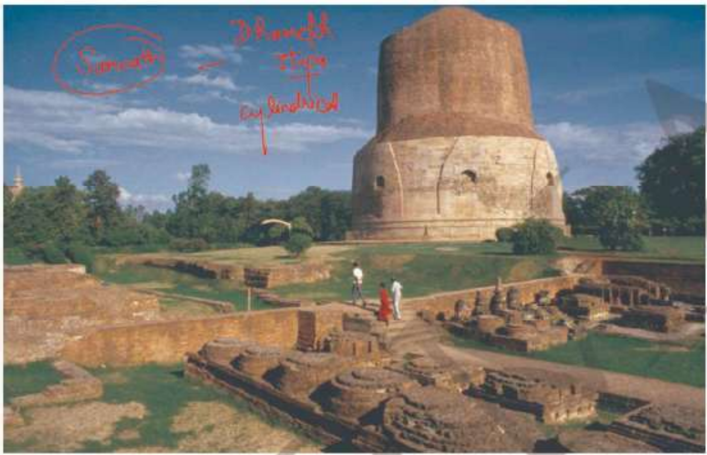

धमेक स्तूप

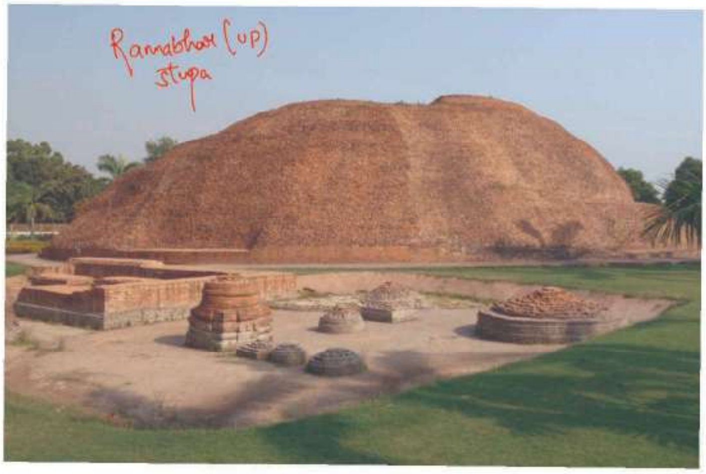

रामभर स्तूप

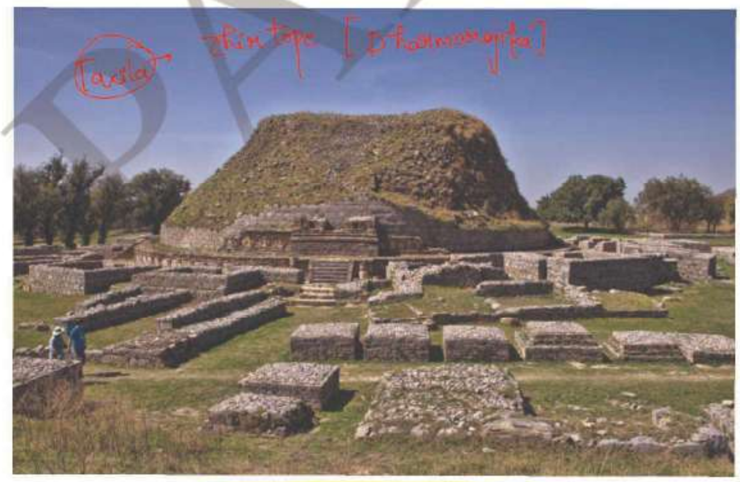

धर्मराजिका स्तूप

IG - @dheeraj._.jaat

पिपरहवा स्तूप

Shanti stupa
Ladakh

Bharhut stupa (M.P.)

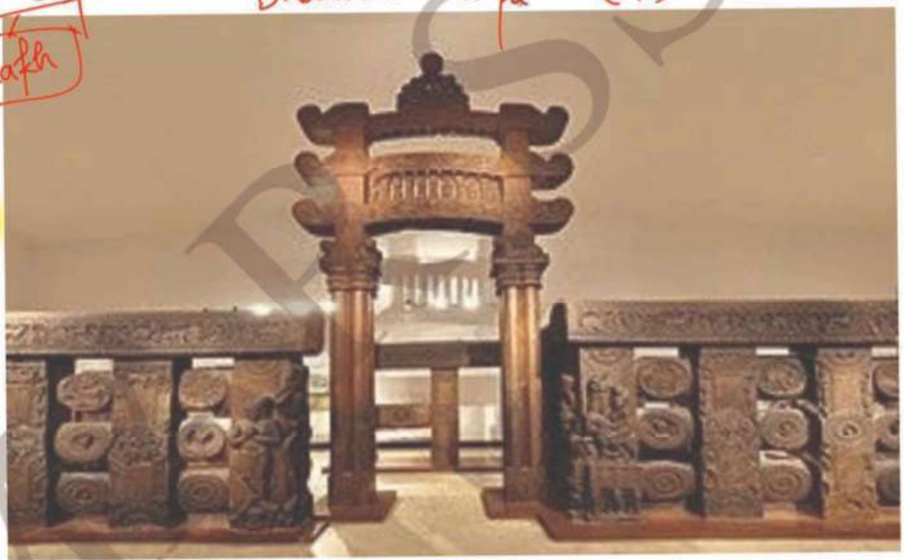

भरहुत स्तूप, मध्य प्रदेश

Buddhism Across the World

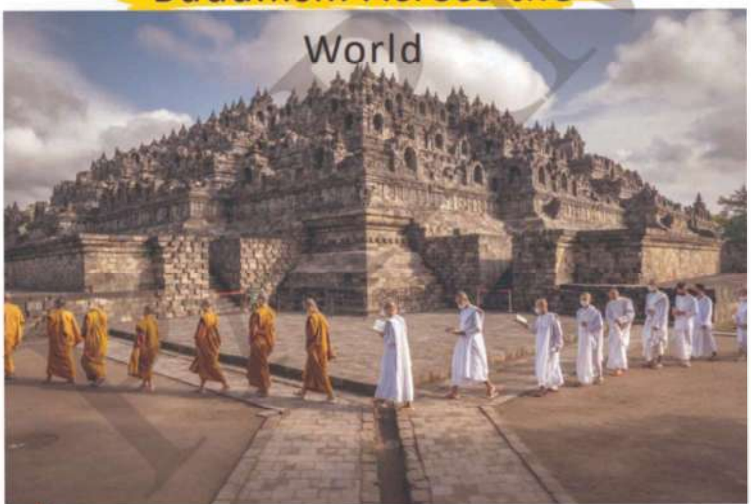

largest in the world — Borobudur : Java, Indonesia

Lomas Rishi Cave

बौद्ध विश्वविद्यालय :

1. नालंदा विश्वविद्यालय → कुमारगुप्त I
2. विक्रमशिला " → धर्मपाल
3. ओदंतपुरी " → गोपाल

बौद्ध धर्म के आठ पवित्र स्थल:

1. लुंबिनी
2. बोधगया
3. सारनाथ
4. कुशीनगर
5. राजगीर
6. श्रावस्ती
7. वैशाली
8. संकसिया

अन्य:

→ लायन कैपिटल का निर्माण बुद्ध की पहला उपदेश की ऐतिहासिक घटना की स्मृति में किया गया था।

→ भरहुत स्तूप (MP) - जातक कथाओं & कहानियों का वर्णन

→ चैतियागिरी विहार / चैत्यविहार - सांची, MP (बौद्ध धर्म)

→ बौद्ध गुफा मंदिर, बराबर गुफाएँ - बिहार

→ पहले & चौथे जैन तीर्थंकरों के जन्मस्थान - अयोध्या

→ कल्पसूत्र - पार्श्वनाथ & महावीर की जीवनियाँ शामिल

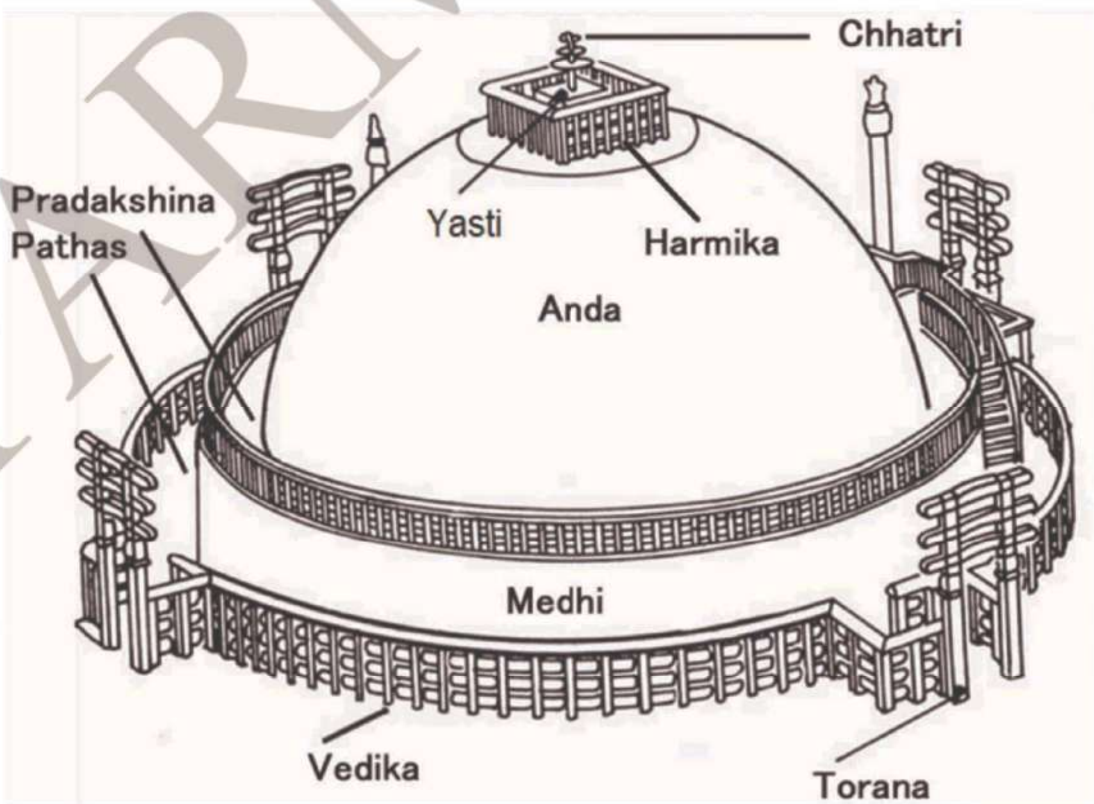

PARMAR SSC

PARMAR SSC
IG - @dheeraj._.jaat

महाजनपद

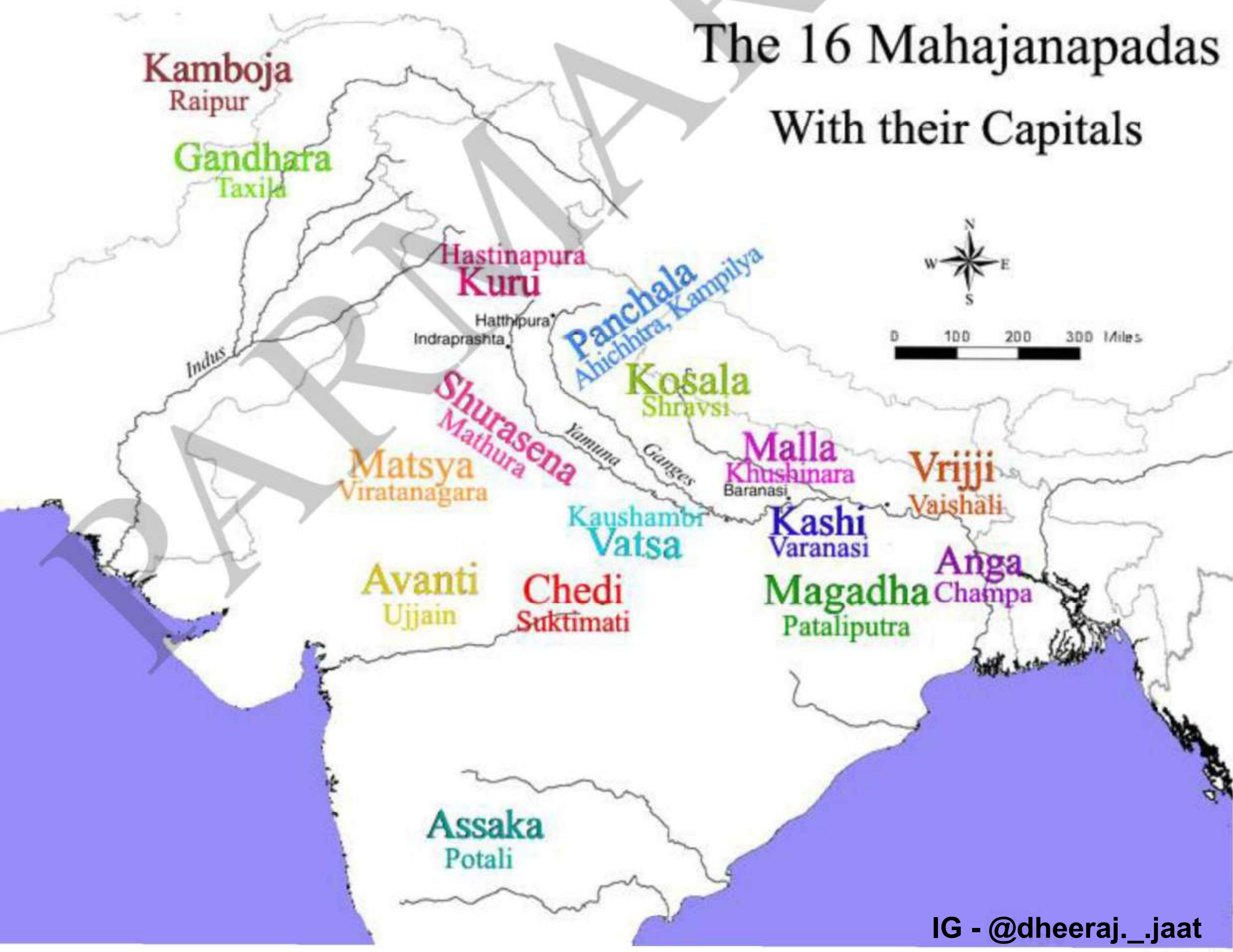

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

महाजनपद & मगध साम्राज्य

भारत, 600 ई० पूर्व (16 महाजनपद)

आर्य → मध्य एशिया से आये
└→ अलग-अलग जातियों में विभाजित
  └→ जन —(क्षेत्र)→ जनपद
   ↓ कईजनपद मिलकर
   महाजनपद
   (कुल = 16)

सबसे शक्तिशाली - मगध

महाजनपदों का उल्लेख:

- अष्टाध्यायी → पाणिनी द्वारा रचित
  संस्कृत भाषा
  कुल 40 जनपदों का वर्णन
- बौद्ध साहित्य
  - अंगुत्तर निकाय → कुल 16 महाजनपदों का उल्लेख (सोलासा महाजनपद)
  - दीघ निकाय → सिर्फ 12 महाजनपदों का उल्लेख
- जैनसाहित्य → भगवती सूत्र → कुल 16 महाजनपद

महाजनपद

गणराज्य	राजतंत्रशाही
अध्यक्ष का निर्वाचन (प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से)	राजा का शासन (वंशानुगत)
(5) वज्जी, मल्ल, कुरु, कम्बोज, अस्मक	(11)

(विजय माल्या कम बोझ कर दिया अस्सी रु. का)

PARMAR SSC

महाजनपद	राजधानी	आधुनिक स्थिति
अंग →	चम्पा →	मुंगेर & भागलपुर
मगध →	राजगीर / पाटलीपुत्र →	गया & पटना
काशी →	वाराणसी →	बनारस
वत्स →	कौशाम्बी →	इलाहाबाद
कौशल →	श्रावस्ती / अयोध्या →	पूर्वोत्तर UP
सूरसेन →	मथुरा →	मथुरा
पांचाल →	अहिच्छत्र / कांपिल्य →	पश्चिमी UP (बरेली)
कुरु →	इंद्रप्रस्थ →	मेरठ और दक्षिण-पूर्व हरयाणा
मत्स्य →	विराटनगर →	जयपुर
चेदी →	सोथीवती / बांदा →	बुंदेलखण्ड
अवंती →	उज्जैन / महिष्मती →	MP & मालवा
गांधार →	तक्षशिला →	रावलपिंडी
कम्बोज →	पुंछा / हाटक →	राजोरी & हजरा
अश्मक →	प्रतिष्ठान / पैठान →	गोदावरी के तट पर
वज्जी →	वैशाली →	वैशाली
मल्ल →	कुशीनारा / कुशीनगर →	देवदार / देवरिया & UP

मगध के उत्थान के कारण :

→ लाभप्रद स्थिति . गंगा के दक्षिण में।

→ इसकी राजधानी राजगृह 5 पहाड़ियों से घिरी हैं और पाटलिपुत्र गंगा और

→ सोन के संगम पर स्थित हैं।

→ हाथियों की बड़ी संख्या में उपलब्धता।

→ महान / पराक्रमी नेता

→ लौह खदानें (झारखंड क्षेत्र में)

↳ हथियार की उपलब्धता

IG - @dheeraj._.jaat

मगध

हर्यक राजवंश :

1. बिम्बिसार (544 ई.पू - 492 BC)

- आगरा विजय
- कूटनीतिक रूप से → विवाह के माध्यम से (3 पत्नियाँ)
  - कौशल राजा का पुत्र प्रसेनजित की बहन
  - चेलाना (लिच्छवी)
  - मद्र कबीला (पंजाब)
- अपने चिकित्सक 'जीवक' को उज्जैन (शासक - पीलिया से ग्रसित) भेजा।

उपाधि - सेनिया (SENIYA)

2. अजातशत्रु :

- चेलाना का पुत्र
- लिच्छवी पर विजय प्राप्त की
- कौशल को हराया (राजा की बेटी से विवाह)
- प्रथम बौद्ध संगीति का संरक्षक
- पिता बिम्बिसार की हत्या
- युद्ध इंजन / गुलेल (Catapults) का उपयोग करके वैशाली पर विजय

3. उदयिन :

- राजधानी राजगीर (राजगृह) से पाटलिपुत्र परिवर्तित

पाटलीपुत्र → वर्तमान नाम - पटना

शिशुनाग वंश :

- अवंती को हराया और मगध मे विलय किया।
- शासक कालाशोक ने द्वितीय बौद्ध संगीति को संरक्षण दिया।

नंद वंश :

1. महापदमनन्द : शीर्षक/उपाधि (एकराट → साम्राज्य निर्माता)

'सभी क्षत्रियों को उखाड़ने वाला'

IG - @dheeraj._.jaat

PARMAR SSC

2. **धनानंद** : मैसेडोनिया का शासक अलेक्जेंडर का इसके शासनकाल (326 ई० पू०) के दौरान आक्रमण

अलेक्जेंडर महान
- → कई स्थानोंपर विजय
- → सेना ने आगे युद्ध के लिये मना किया

हाइडेस्पेस / हाइडेस्पीज का युद्ध - सिकंदर & पोरस के बीच
(विजयी)
झेलम नदी के तट पर

समाज:

मिट्टी के बर्तन: उत्तरी काले पॉलिश बर्तन (NBPW)

- नवपाषाणकाल - Cord impresses
- सिंधु घाटी सभ्यता / IVS - OCP / BRW
- पूर्व वैदिक काल / EVA - BRW / PGW
- उत्तर वैदिक काल / LVA - PGW / NBPW

- पंचमार्क चांदी के सिक्के (धन का रूप)
  - ↓ व्यापार करने में सुविधा
  - निश्का
  - काषर्पिण

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

कारीगर & व्यापारी :

गिल्ड / श्रेणियाँ (संगठन) → व्यापारियों का समुदाय

- शिल्पकला वंशानुगत थी।
- लोहे के फाल → कृषि अधिशेष (हड़प्पा के बाद दूसरा शहरीकरण)

पद :

- ग्राम प्रधान - भोजक
- धनी किसान - गृहपति
  (अधिकांश वैश्य)
- किसानों को कर के रूप मे उपज का 1/6 भाग देना होता था।

→ बली - राजा को स्वैच्छिक भेंट

→ टोल टैक्स - शौल्लिका / शुल्काध्यक्ष के नाम से , अधिकारियों द्वारा वसूला जाना

नंद वंश का अंतिम शासक - धनानंद

विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना - धर्मपाल (पालराजा)

→ मगध , गंगा के दक्षिण में एवं गंगा और सोन नदी के मिलनस्थल पर स्थित था। (शक्तिशाली होने का कारण)

→ वाराणसी - वरुण और अस्सी नदियों के नाम पर

→ मथुरा - उत्तरपथ (कंबोज, गांधार) और दक्षिणपथ के मिलनस्थल पर था।

→ मगध के बाद सबसे शक्तिशाली महाजनपद - अवंती

→ वज्जी → कुल 8 गण → जनात्रिका, विदेह, लिच्छवी

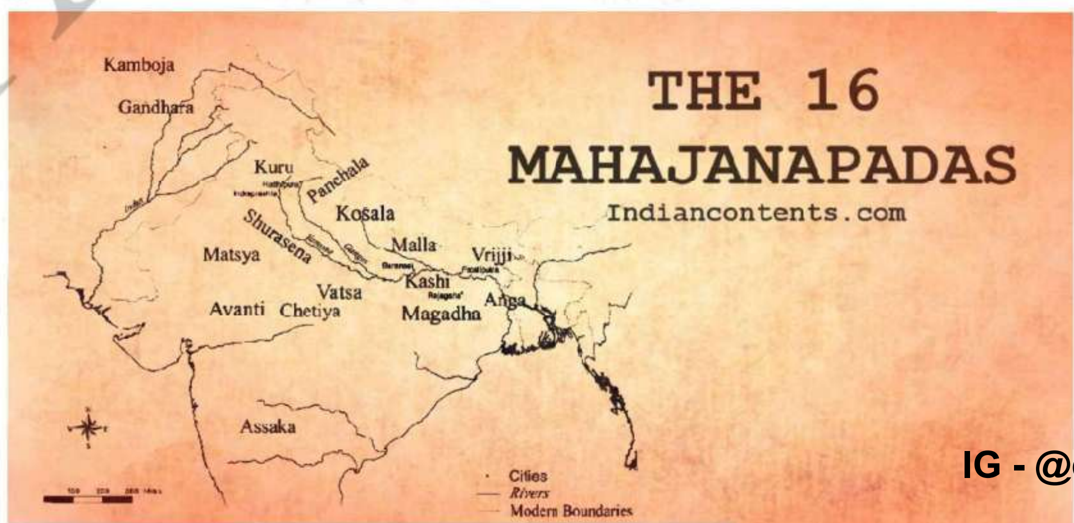

IG - @dheeraj._.jaat

PARMAR SSC

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

मौर्य साम्राज्य

PARMAR SSC

मौर्य वंशावली (322 ई.पू. से 185 ई. पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू. से 298 ई.पू.)
  - बिन्दुसार (248 ई.पू. से 273 ई.पू.)
    - सुसीम
    - अशोक (273 ई.पू. से 232 ई.पू.)
      - कुणाल (232–224 से ई.पू.)
        - दशरथ (बंधुपालित) (224 ई.पू. से 216 ई.पू.)
        - सम्प्रति (दुपालित) (216 ई.पू. 207 ई.पू.)
          - शालिनशुक (204 ई.पू. से 207 ई.पू.)
          - देवधर्मन (207 ई.पू. से 200 ई.पू.)
          - शतधन्वर (200 ई.पू. से 191 ई.पू.)
          - बृहद्रथ (191 ई.पू. से 184 ई.पू.)
      - जलौन (कश्मीर)
      - तीवर
    - तिस्स
    - अन्य पुत्र

मौर्य साम्राज्य के स्त्रोत :

1. **कौटिल्य की अर्थशास्त्र :** मौर्यसाम्राज्य का प्राथमिक स्त्रोत, यह पुस्तक ब्राह्मण के घर में मिली।
   ↳ चंद्रगुप्त मौर्य को सिंहासन पर बैठाने में मुख्य भूमिका

2. **विशाखदत्त का मुद्राराक्षस :** गुप्त साम्राज्य के समय लिखित पुस्तक
   ↳ संस्कृत के विद्वान

मौर्य साम्राज्य ने लगभग सम्पूर्ण भारत पर कब्जा कर लिया था। (कुछ दक्षिण भारत को छोड़कर)
↳ भारत + अफगानिस्तान तक

3. **मेगस्थनीज की इण्डिका :**
   ↳ यात्री, भारत आया (ग्रीक से)

4. **बौद्ध साहित्य :** मौर्य साम्राज्य का स्त्रोत, मौर्य के समकालीन
   अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया (मुख्य कारण)

इसलिय बौद्ध साहित्य अशोक एवं मौर्य साम्राज्य का वर्णन करते हैं।

जातक कथायें { दीपवम्स, महावम्स, दिव्यदान } (मौर्य साम्राज्य का वर्णन)

मौर्यों की उत्पत्ति : ठोस सबूत नहीं।

विशाखदत्त की मुद्राराक्षस के अनुसार

चंद्रगुप्त मौर्य → धनानंद (नंद वंश का अंतिम शासक) के दरबार में एक शूद्र कुल की महिला के साथ अवैध संबंध से चंद्रगुप्त मौर्य एक अवैध बालक

↓

बौद्ध धर्म में उच्च कुल का बताया गया।

↳ क्योंकि अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया था तो बौद्ध धर्म में उसे निम्न कुल की जगह उच्च कुल का बताया गया।

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

→ शूद्र कुल की उस महिला के नाम मौरी के कारण मौर्य नाम पड़ा।

- मेगस्थनीज की इंडिका → मौर्य निम्न कुल के
- पुराण → शूद्र बताते हैं।
- मुद्राराक्षस { त्रिशाल बताया गया; कुलहीन (निम्न कुल का)
- जूनागढ़ अभिलेख (गुजरात) → वैश्य बताया

शासक :

→ नंद वंश के अंतिम शासक धनानंद को हराकर चंद्रगुप्त मौर्य ने कौटिल्य की मदद से मौर्य वंश की स्थापना की।

कौटिल्य → अन्यनाम → विष्णुगुप्त, चाणक्य

→ चाणक्य के पिता (चणक्य) - धनानंद के दरबारी

चाहते थे → गद्दी पर
- धनानंद ✗
- धनानंद का छोटा भाई ✓

→ धनानंद ने चाणक्य के पिता को मरवा दिया।
  ↳ जिसका बदला कौटिल्य ने लिया।

→ कौटिल्य अपनी सेनाओं मे विषकन्याओं को रखते थे।
- शत्रुओं के खिलाफ प्रयोग
- → अनाथ लडकियाँ
- → सूक्ष्म / अल्प मात्रा मे विष दिया जाता था।
- → ओंठ व लार मे विष रहता था

→ चाणक्य नागासाधु के भेष मे धनानंद के दरबार मे गये
  ↳ बेइज्जती कर दी चाणक्य की

चाणक्य ने बोला → पाटलिपुत्र की जनता बहुत संख्या में मरेगी।
- ↳ पाटलिपुत्र की झील मे जहर मिलाया → असंख्य मृत्यु हुई
- ↳ मृत्यु रोकने के लिये धनानंद को वन जाने को कहा।

→ वन मे बिषकन्याओं द्वारा धनानंद की मृत्यु। (चंद्रगुप्त मौर्य शासक बना)

PARMAR SSC
IG - @dheeraj._.jaat

चंद्रगुप्त मौर्य :

- संस्थापक
- घनानंद को हराया
- सेल्यूकस निकेटर (अलेक्जेंडर महान का कमांडर) को हराया।
  - ↳ उत्तर पश्चिमी भारत पर शासन
- मगध मे अकाल पड़ा → चंद्रगुप्त मौर्य ने जैन धर्म अपनाया
  - ↓ दक्षिण भारत, भद्रबाहु के साथ गये। (संलेखना व्रत से मृत्यु)
- सेल्यूकस निकेटर ने मेगस्थनीज को चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार मे भेजा।
  - ↳ अपना पूरा क्षेत्र चंद्रगुप्त मौर्य को दिया (500 हाथी के वापिसी में)
  - ↳ बेटी हेलिना की शादि चंद्रगुप्त मौर्य से की। (चाणक्य की सलाह पर)

बिंदुसार :

- चंद्रगुप्त मौर्य का बेटा
  - ↳ अमित्रघात के नाम से जाना जाता।
- इन्होने आजीवक संप्रदाय को संरक्षण दिया।
- उसने मीठी शराब, सूखे अंजीर और एक दार्शनिक की मांग सीरिया के एंटिओकस I से की।
- वह दो समुद्रों के बीच की भूमि पर विजय प्राप्त करने के लिए जाने जाते हैं।
- पुत्र - अशोक

(आजीवक संप्रदाय → मखली गोशाल)

PARMAR SSC

अशोक :

- बिंदुसार का पुत्र
- सर्वाधिक क्षेत्र पर शासन
- चंद्रगुप्त मौर्य के समय, उडीसा (कलिंग) को भी कब्जा किया।
  (स्वतंत्र था कलिंग) ↳ कलिंग युद्ध

- कुल 12 वर्ष शासन किया।
- राज्याभिषेक के 9 वें साल (8 वर्ष बाद) 261 BC में कलिंग युद्ध किया & जीता।
- अपने 99 भाइयों को मारकर गद्दी पर बैठा।
- कलिंग युद्ध के बाद हृदय परिवर्तित

भेरीघोष → धम्मघोष
(युद्ध नीति) (प्यार से जीतना)

अशोक के अभिलेख :

अभिलेख
- शिलालेख
  - मुख्य शिलालेख — 14
  - लघुशिलालेख — 15
- स्तंभलेख

↳ 14 लाइने लिखी गई न कि 14 चट्टानें

PARMAR SSC
IG - @dheeraj._.jaat

अशोक के प्रमुख शिलालेख एवं उनमें वर्णित विषय

पहला शिलालेख	इसमें पशुबलि की निंदा की गयी है।
दूसरा शिलालेख	इसमें अशोक ने मनुष्य एवं पशु दोनों की चिकित्सा-व्यवस्था का उल्लेख किया है।
तीसरा शिलालेख	इसमें राजकीय अधिकारियों को यह आदेश दिया गया है कि वे हर पाँचवें वर्ष के उपरान्त दौरे पर जाएँ। इस शिलालेख में कुछ धार्मिक नियमों का भी उल्लेख किया गया है।
चौथा शिलालेख	इस अभिलेख में भेरीघोष की जगह धम्मघोष की घोषणा की गयी है।
पाँचवाँ शिलालेख	इस शिलालेख में धर्म-महामात्रों की नियुक्ति के विषय में जानकारी मिलती है।
छठा शिलालेख	इसमें आत्म-नियंत्रण की शिक्षा दी गयी है।
सातवाँ एवं आठवाँ शिलालेख	इनमें अशोक की तीर्थ-यात्राओं का उल्लेख किया गया है।
नौवाँ शिलालेख	इसमें सच्ची भेंट तथा सच्चे शिष्टाचार का उल्लेख किया गया है।
दसवाँ शिलालेख	इसमें अशोक ने आदेश दिया है कि राजा तथा उच्च अधिकारी हमेशा प्रजा के हित में सोचें।
ग्यारहवाँ शिलालेख	इसमें धम्म की व्याख्या की गयी है।
बारहवाँ शिलालेख	इसमें स्त्री महामात्रों की नियुक्ति एवं सभी प्रकार के विचारों के सम्मान की बात कही गयी है।
तेरहवाँ शिलालेख	इसमें कलिंग युद्ध का वर्णन एवं अशोक के हृदय-परिवर्तन की बात कही गयी है। इसी में पड़ोसी राजाओं का वर्णन है।
चौदहवाँ शिलालेख	अशोक ने जनता को धार्मिक जीवन बिताने के लिए प्रेरित किया।

1.अशोक के शिलालेख

वृहद शिलालेख

शाहबाद गढ़ी	पाकिस्तान
मनसेहरा	पाकिस्तान
कालसी	उत्तराखंड
एर्रगुडी	आंध्र प्रदेश
धौली	उड़ीसा
जौगढ़	उड़ीसा
गिरनार	गुजरात
सोपारा	महाराष्ट्र

लघु शिलालेख

मास्की	कर्नाटक
गुर्जर	मध्यप्रदेश
ब्रह्मगिरि	कर्नाटक
निट्टूर	कर्नाटक
भाब्रू	राजस्थान
शेर ए कुंना	कंधार
सहस राम	बिहार
तक्षशिला	अफगान
लघमान	

PARMAR SSC
IG - @dheeraj._.jaat

→ धम्म का सिद्धांत दिया अपने अभिलेखों में।

→ अभिलेखों को पहली बार पढा - जेम्स प्रिंसेप

→ मिलने के स्थान - धौली, जौगड़ा, येरागुडी, सोपरा, गिरनार, कंधार, कालसी, शाहबाजगढी, मानसेहरा

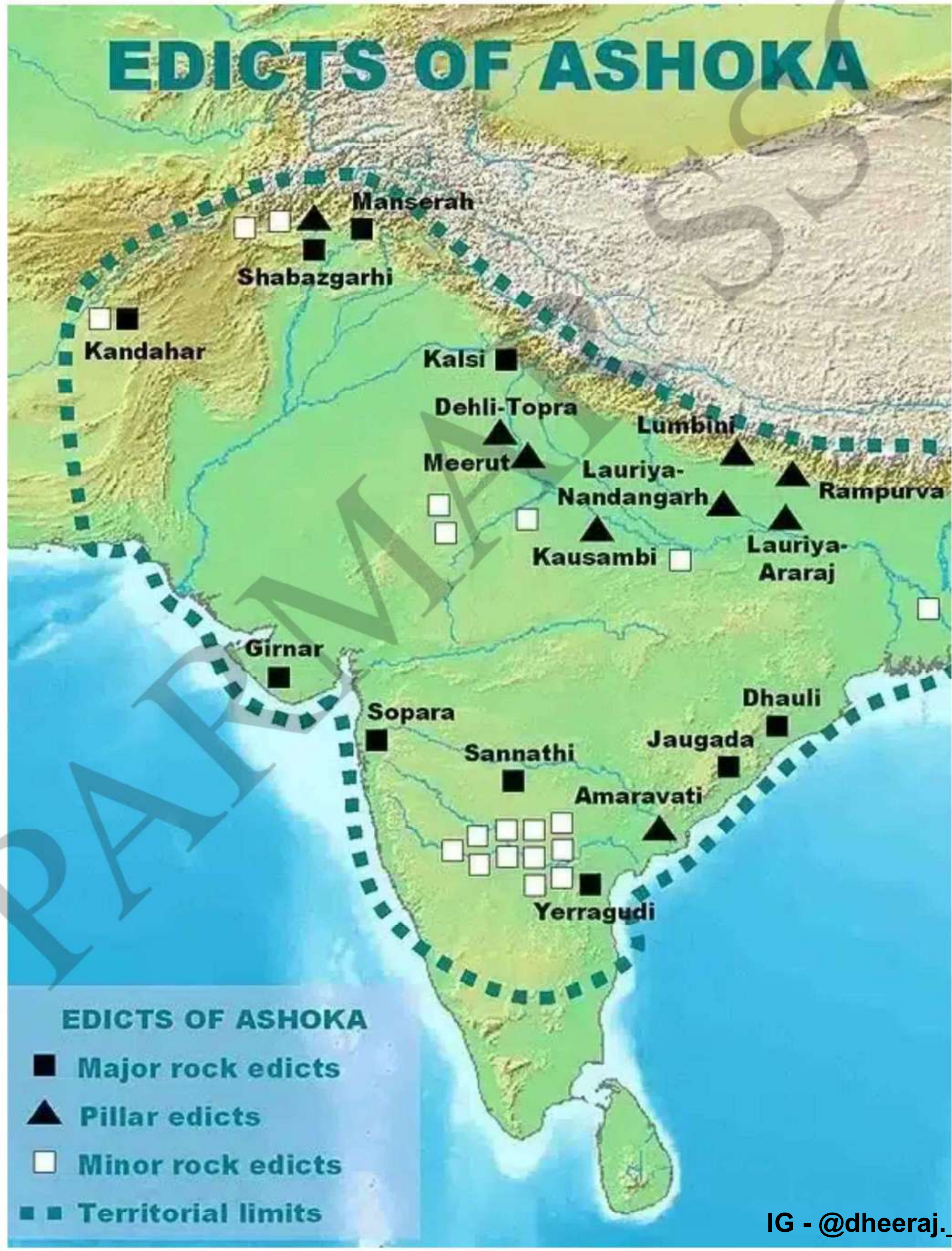

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

स्तम्भ शिलालेख :

- कुल - 14
- भाषा = 3 , लिपि - 4
- प्रयुक्त प्रमुख भाषा - प्राकृत
- ” ” लिपि - ब्राह्मी (अन्य - खरोष्ठी)
  - ↳ ईरानियों द्वारा प्रस्तुत
- 13 वें शिलालेख में कलिंग युद्ध का वर्णन ।

लघु शिलालेख : (4)

1. मास्की - कर्नाटक
2. गुर्जर - MP
3. ब्रह्मगिरी
4. नेट्टूर

स्तंभ शिलालेख : (7)

- → दिल्ली टोपरा स्तंभ शिलालेख - एकमात्र शिलालेख जो 7 वें शिलालेख के साथ है ।
- → एक ही भाषा & एक ही लिपि का प्रयोग
  - ↓ प्राकृत ↓ ब्राह्मी
- → लौरिया अरराज } बिहार
- → लौरिया नंदगढ़ } बिहार

- रामपुरवा स्तंभलेख - केवल बैल मिला

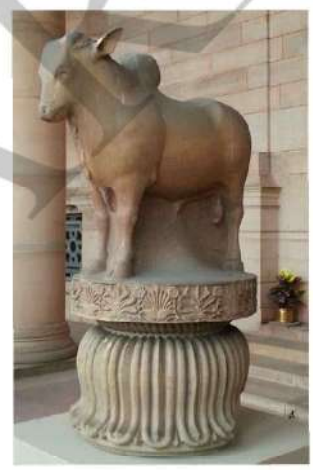

- सारनाथ - अशोक के धम्मपरिवर्तन को दर्शाता है ।
  इसे उन्होंने बुद्ध के प्रथम उपदेश की स्मृति में बनवाया ।
  राष्ट्रीय प्रतीक (26 जनवरी 1950)

PARMAR SSC

- **बराबर पहाड़ी गुफाएँ :** बिहार , अशोक ने बौद्धो के लिये गुफाएं बनवाया।
- **लोमस ऋषि गुफाएं :** बिहार

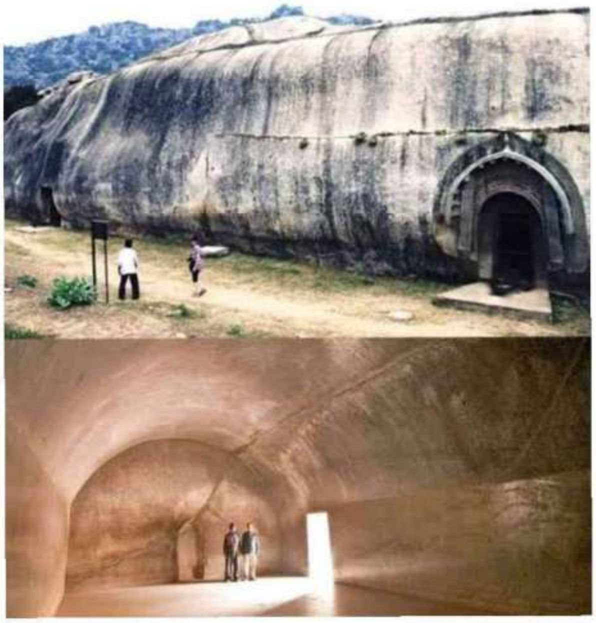

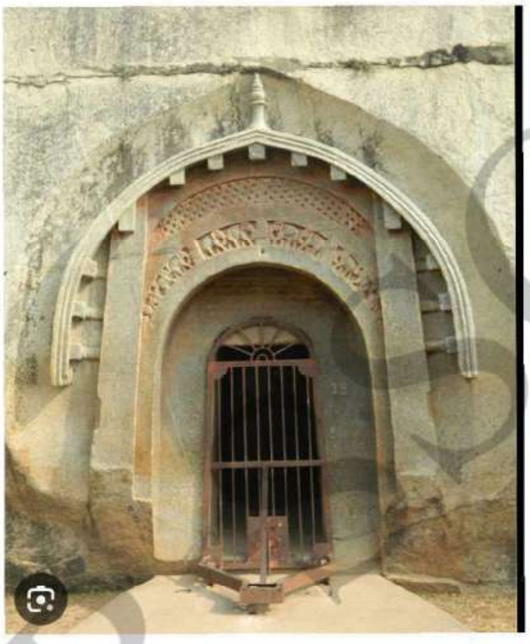

- **नागार्जुनी गुफाएं :** अशोक के पौते दशरथ द्वारा निर्मित
- **रूम्मिनदेई / निगालीसागर**
  शिलालेख → नेपाल

- अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र & पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार- प्रसार के लिए सीलोन (श्रीलंका) भेजा।
- **कनकमुनि / कोणागमन स्तूप** → पुनर्निर्मित
- मौर्य वंश का अंतिम शासक - **बृहद्रथ**
  ↳ **पुष्यमित्र शुंग ने हराया**

मौर्य प्रशासन :

कौटिल्य द्वारा सप्तांग सिद्धांत दिया गया - प्रशासन को नियंत्रित करने के लिये 7 तत्व

- राजा → राजा
- सचिव → अमात्य
- क्षेत्र → जनपद
- किला → दुर्ग
- खजाना → कोष
- सेना → सेना
- मित्र → मित्र

कर प्रणाली :

- सोने में चुकाया गया कर - हिरण्या / Hiranya
- इमरजेन्सी कर - प्रणय / Pranaya
- गांवों द्वारा वस्तु के रूप में दिया जाने वाला कर - पिंडकारा / PindaKara
- सेना रखरखाव कर - सेनाभक्तम् / SenabhaKtam
- अधिभार - पार्श्वम / Parsvam

- **अधिकारी**
  - सन्निधाता - कोषाध्यक्ष
  - समाहरता (समाहर्ता) - कर संग्राहक

- **न्यायालय**
  - फौजदारी → प्रदेष्टा (कण्टक शोधन)
  - दीवानी → व्यवहारिक (धर्मस्थीय)

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

गोपा - → हिसाब के लिये जिम्मेदार

अक्षपटलाध्यक्ष - (अक्षपटलिक) → महालेखाकार

नगरका → शहर एवं प्रशासन के लिये

सीताध्यक्ष → कृषि का अध्यक्ष

समष्ठाध्यक्ष → बाजार के लिये

नवाध्यक्ष → जहाजों का हिसाब

शुल्काध्यक्ष → सीमा शुल्क के लिये

धम्म महामात्य → धर्म के पालन की जाँच के लिये

इंडिका में उल्लिखित मेगस्थनीज के अनुसार -

नगर प्रशासन → 6 समितियाँ → प्रत्येक में 5 सदस्य

सेना → 6 समितियाँ → प्रत्येक में 5 सदस्य

प्रांतीय प्रशासन -

- मध्य प्रांत (मगध)
- उत्तरी – उत्तरपथ (तक्षशिला)
- पूर्वी – प्राच्यपथ (तोशली / कलिंग)
- पश्चिमी – अवंतीपथ (उज्जैन)
- दक्षिणी – दक्षिणपथ, स्वर्णगिरी

समाज - 4 वर्ण

- इंडिका के अनुसार, समाज को 7 वर्णों मे विभाजित, कोई गुलाम नही।
- अर्थशास्त्र के अनुसार, महिलायें उच्च पद पर आसीन थी & सेना का हिस्सा थी।
- अन्त्यज: बिना किसी जाति के
- विवाह के 8 प्रकारों का उल्लेख किया गया। और तलाक की अनुमति दी गई।

PARMAR SSC

जाति प्रथा :

मेगस्थनीज की पुस्तक इंडिका के अनुसार भारतीय समाज सात जातियों में विभाजित था, जो दार्शनिक, किसान, शिकारी और चरवाहे, व्यापारी, योद्दा, निरीक्षक (जासूस) और पार्षद थे।

अर्थव्यवस्था :

अशोक ने कर मूल्यों को कम किया।
लोगों को बाली (स्वैच्छिक भेंट) मे नही जाना पड़ता था।

बंदरगाह :

भरौच | भड़ौच , सुपारा - पूर्व
ताम्रलिप्ति - पश्चिम
} बंदरगाह

PARMAR SSC

मौर्य वंश के बाद

शुंग वंश : (185-73BC)

- मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ को प्रमुख सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने मारकर शुंगवंश की नींव रखी।
- राजधानी- विदिशा (वर्तमान में MP)
- अनुसरण- हिन्दु धर्म के अनुयायी + बौद्ध धर्म को संरक्षण
  ↓
  भरहुत स्तूप (MP) का निर्माण पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल में हुआ।
- अग्निमित्र : पुष्यमित्र शुंग का पुत्र
  ↳ मालविका (प्रेमिका)
- मालविकाग्निमित्र (नाटक) - कालीदास द्वारा रचित
- समकालीन- पतंजली (योग दर्शन के संस्थापक)
  ↳ महाभाष्य (पुस्तक)
  ↳ पुष्यमित्र शुंग के लिये 2 अश्वमेध यज्ञ को आयोजित किया।
- अंतिम शासक- देवभूति
  ↳ मुख्य सेनापति वासुदेव द्वारा देवभूति की हत्या कर कण्व वंश की नींव

कण्व वंश : 73 BC- 28 BC

राजधानी - पाटलिपुत्र

सातवाहन वंश : 60 BC - 225 AD

PARMAR SSC

समकालीन {
- कण्व वंश - उत्तर में
- सातवाहन - नीचे, महाराष्ट्र वाले क्षेत्र में

→ 16 महाजनपदों में सबसे दक्षिणी - अश्मक
↓
राजधानी - प्रतिष्ठान / पैठान (महाराष्ट्र)
(सातवाहन वंश की राजधानी)

→ संस्थापक - सिमुक

→ सबसे महान शासकों में एक - गौतमीपुत्र सातकर्णी **(106-130AD)**

नासिक अभिलेख ↳ शक शासक क्षत्रपनहपान को हराया
↳ मध्य एशिया से भारत आये

→ सातवाहन वंश - ब्राह्मण

- गौतमीपुत्र शातकर्णी की उपाधि - एकाब्राह्मण
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने चार गुना वर्ण व्यवस्था स्थापित करने का दावा किया।
- शक वंश के रूद्रदामन प्रथम ने वशिष्ठपुत्र पुलुमावि (एक सातवाहन शासक) को हराया।

→ समाज {
- पितृवंशीय - सम्पत्ति के हिसाब से
- मातृवंशीय - अपने नाम के आगे माता का नाम

→ सातवाहनों ने ब्राह्मणों & बौद्ध भिक्षुओं को भूमि दान करने की प्रथा शुरु की।

व्यापारी {
- बौद्ध धर्म को मानने वाले
- जैन धर्म " " "

↳ राजाओं को कर इन्हीं से मिलता था।
(इसलिये बौद्ध भिक्षुओं को भूमि दान)

→ शीशे के बने सिक्के चलवायें।

IG - @dheeraj._.jaat
PARMAR SSC

- बहुत से चैत्य और विहारों का निर्माण करवाया। (→ चट्टानों को काटकर)

जैसे- नासिक, कन्हेरी, करले → महाराष्ट्र

लोमस ऋषि गुफा
नागार्जुनी गुफा } बिहार

- स्तूप बनवाये - अमरावती स्तूप, नागार्जुनकोंडा (आंध्रप्रदेश)
- अजंता और एलोरा गुफा सबसे पहले इनके ही शासनकाल में बनी।

{ चैत्य- पूजा स्थल
विहार- निवासस्थान }

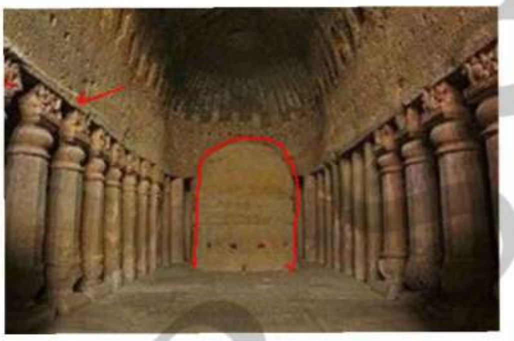

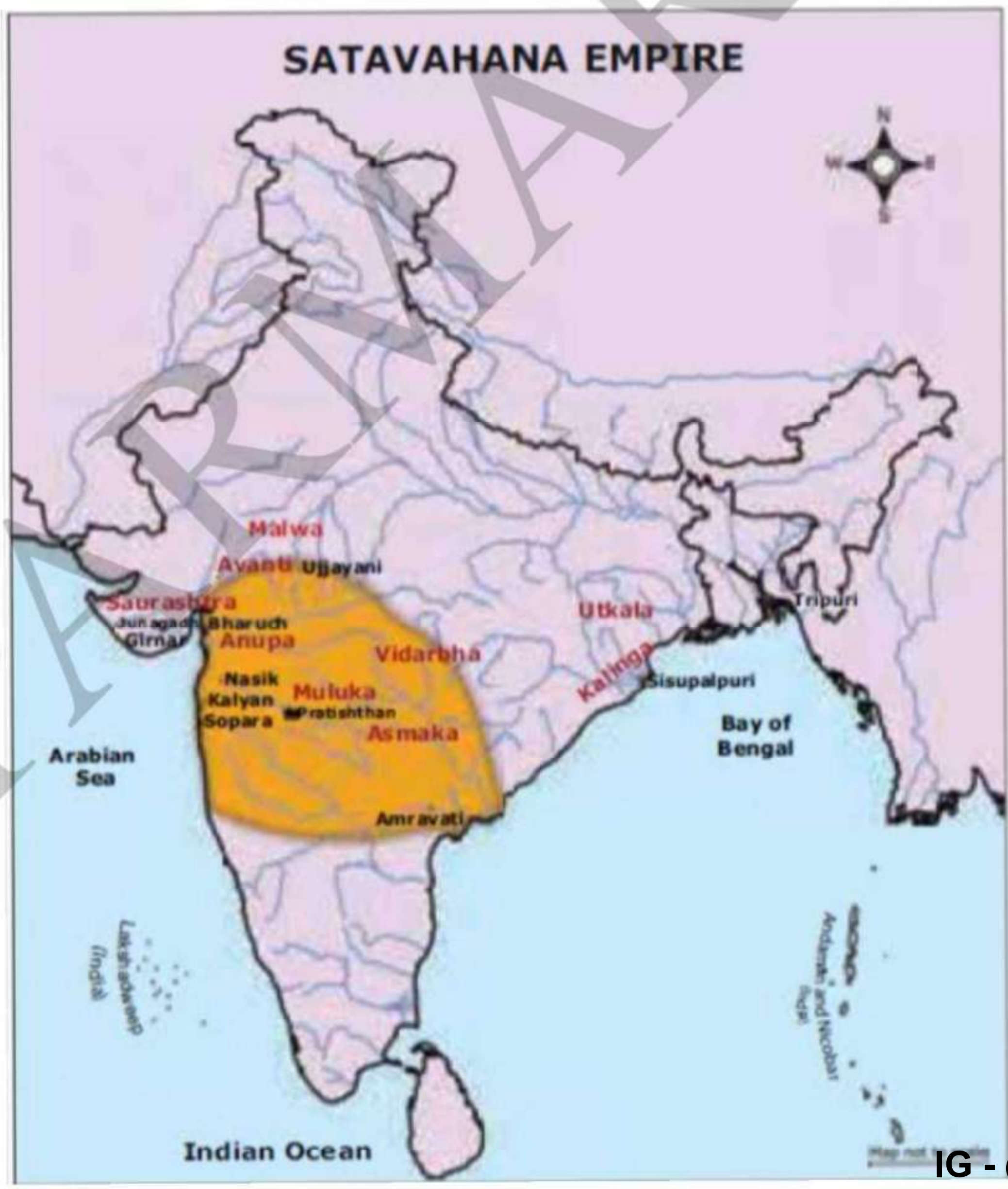

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

चेदिवंश : (60 ई.पू. - 225 ई.पू.)

- इस राजवंश ने कलिंग के कुछ हिस्सों पर शासन किया।
- राजा खारवेल इस राजवंश के सबसे महान शासक थे जिन्होंने जैन धर्म को अपनाया।

(कलिंग → उड़ीसा)

IG - @dheeraj._.jaat

मध्य भारत से आक्रमण :

- मध्य एशिया में कई वंश शासन कर रहे थे।
  - स्काइथिया → बाद में शक कहलाये
  - यूजही → ये वास्तव मे कुषाण थे।
  - पार्थिया
  - यूनानी
- विश्व का आँठवां अजूबा - कम्बोडिया का अंकोरवाट मंदिर
- भारत मे अधिकतम आक्रमण - हिन्दुकुश तरफ से
- सबसे पहले मध्य एशिया से आक्रमण किया - यूनानी वंश

यूनानी:

- भारत मे इनको इंण्डोग्रीक कहा गया।
- यूनानी उत्तरी अफगानिस्तान में शासन कर रहे थे।
- अफगानिस्तान के दक्षिण में सेल्युकस निकेटर का वंश सेलुसिस वंश का शासन।
- स्काइथियन के द्वारा यूनानियों का भारत पर आक्रमण।
- सबसे पहला शासक - मिलिन्द
  - → मिलिंदपन्हो
    - मिलिन्द
    - ↳ प्रश्न
    - ↓ मिलिन्द & नागसेन का वार्तालाप
- यूनानी द्वारा सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्कों का प्रयोग
  - सबसे पहले सिक्के → महाजनपद (मगध में मौर्य वंश में)
    - ↳ पंचमार्क सिक्के (सिल्वर)
- यूनानी ने सबसे पहले राजा की तस्वीर वाले सिक्के चलाये।
- इन्होंने हैलेनिस्टिक कला | गांधार कला की शुरुवात की (उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में)
  - ↳ मध्य एशिया + भारत की कला

PARMAR SSC

शक वंश : 5 शाखायें
↳ 'क्षत्रप'

- शक - स्काईथियन
- 5 शाखायें अफगानिस्तान मे अलग- अलग शासन।
- कन्नड, गुजरात मे एक शाखा।
- शको ने उत्तर पश्चिम & उत्तर भारत मे शासन किया।
  ↳ 400 ई० तक शासन
- इन्होने क्षत्रप प्रणाली की शुरुआत की।
  ↳ साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया गया था, प्रत्येक सैन्य गवर्नर महाक्षत्रप (महान क्षत्रप) के अधीन था।
- राजा विक्रमादित्य (परमार वंश) ने शकों को हराया (57 BC)
  ↓
  विक्रम संवत शुरु → हिन्दु धर्म में मान्यता
- भारत सरकार → शक संवत
  2023 + 57 = 2080 (वर्तमान)
- विक्रमादित्य → उज्जैन के शासक
- परमार वंश के पहले शासक - विक्रमादित्य परमार
- सबसे प्रसिद्ध शक शासक → रुद्रदामन प्रथम (क्षत्रप वंश) (130-150AD)
  ↳ जूनागढ़ शिलालेख / गिरनार शिलालेख (गुजरात)
  ↓ सुदर्शन झील की मरम्मत
  निर्मिति ↳ पुष्यगुप्त वैश्य (चंद्रगुप्त मौर्य के समय)
- शक → पार्थियन → कुषाण

PARMAR SSC

PARMAR SSC

कुषाण साम्राज्य : (Yuezhis/Tocharians)

- पहली शताब्दी से तीसरी शताब्दी तक
- राजधानी- पेशावर (पहले), मथुरा (बाद में)
- स्वयं को 'देवताओं का पुत्र / राजाओं का राजा' कहते थे।
- कुषाण साम्राज्य में अलग-अलग वंश आये।
- 1st → कडफिसेस
  - कुजुल कडफिसेस
  - वीमा कडफिसेस

IG - @dheeraj._.jaat

कनिष्क (78 AD - 101 AD)

- सबसे शक्तिशाली शासक
- अन्य नाम - द्वितीय अशोक
- शक संवत की शुरुआत - 78 AD
- चौथी बौद्ध संगीति का संरक्षक
- महायान बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया।
- सोने के शुद्धतम रूप वाले सिक्के चलाये।
- रेशम मार्ग पर नियंत्रण।

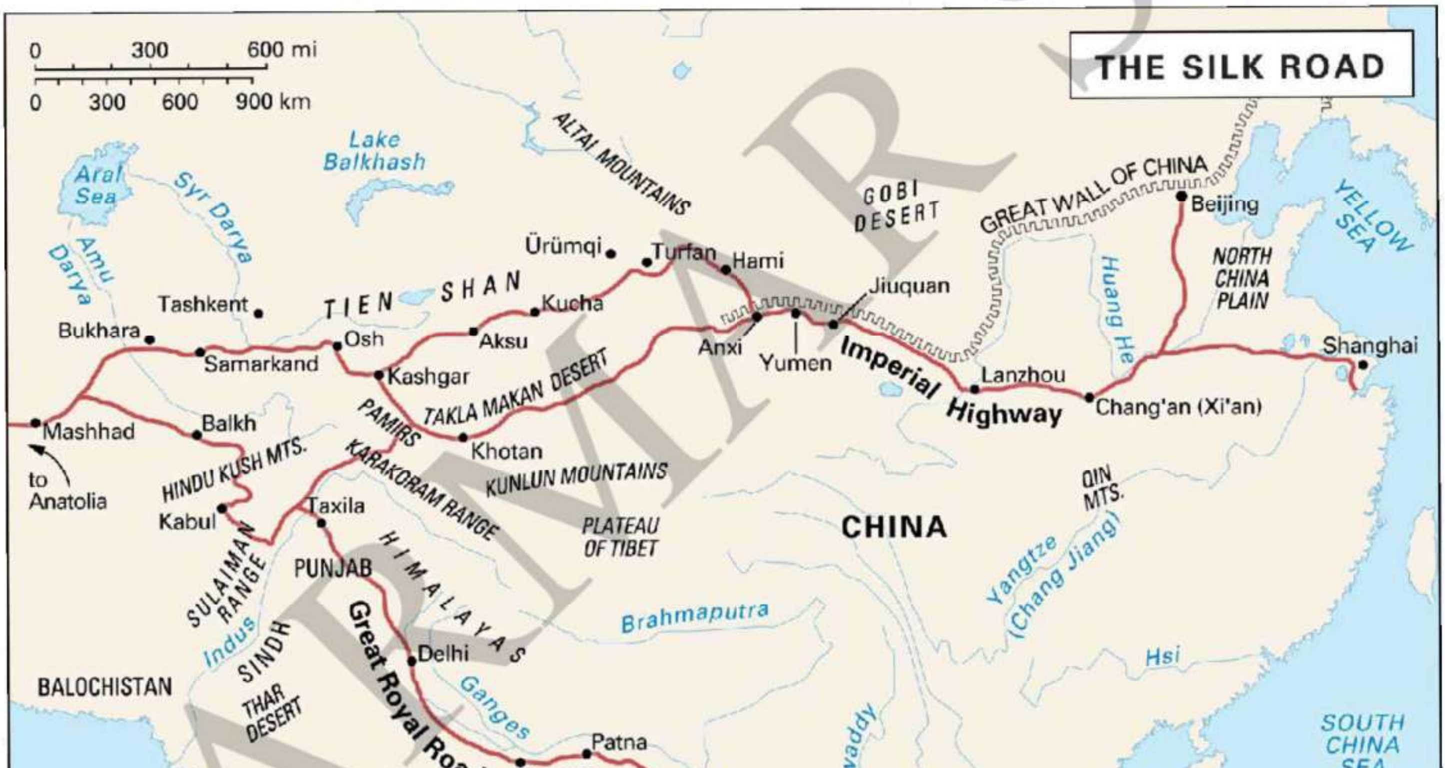

- हमें उनके बारे में रबाता (अफगानिस्तान) शिलालेखों से पता चलता है जो दूसरी शताब्दी ई. के हैं, तथा बैक्ट्रियन भाषा और ग्रीक लिपि में लिखे गये हैं।

PARMAR SSC
IG - @dheeraj__jaat

विदेशी आक्रमण का भारतीय समाज पर प्रभाव:

→ **मिट्टी के बर्तन:** लाल बर्तन

ये लोग भिन्न तरीके से घुड़सवार तकनीक, पगड़ी पहनना, शेरवानी पहनना, आदि सिखायें।

→ **राजनीति:** कुषाणों ने सरकार की क्षत्रप प्रणाली शुरू की।

- सैन्य शासन (वंशानुगत गद्दी X)
- यूनानियों द्वारा रणनीति

→ **संस्कृति:** शिव & बुद्ध की पूजा

→ **साहित्य:** बुद्धचरित → अश्वघोष (बुद्ध की पहली जीवनी)

महावस्तु & दिव्यदान

कामसूत्र → वात्स्यायन (4th-3rd century BC)

→ **विज्ञान:** चरकसंहिता (चिकित्सा पर) (3rd-2nd century BC) → चरक

जनक

शल्य चिकित्सा के जनक - सुश्रुत

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

गांधार

ग्रीक

बौद्ध धर्म

बुद्ध के चारों ओर प्रभामंडल (Halo) ठीक से विकसित नही हुआ।

भूरा बलुआ पत्थर का प्रयोग

मथुरा

स्वदेशी (कुषाणों द्वारा विकास)

हिन्दू देवी - देवता & जैन

प्रभामंडल का ठीक से विकास

लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

संगम काल

दक्षिण भारत में कांस्य युग नहीं, बल्कि महापाषाण युग है

समय अवधि - 2500 ई०पू०

↓ दक्षिण भारत में लौह युग

→ कब्रों के आसपास पाया जाता है

मिट्टी के बर्तन : काले और लाल बर्तन

समुदाय : ग्रामीण / देहाती समुदाय

→ दक्षिण भारत का इतिहास

↳ **चेर, पांड्या और चोल** राजवंश से शुरू होता है।

IG - @dheeraj._.jaat

PARMAR SSC

दक्षिण भारत का इतिहास

- दक्षिण भारत → चेर, चोल & पांड्या (3 साम्राज्य)

संगम वंश :
↳ सभा

- सभाएँ आयोजित → तमिल क्षेत्र मुच्चंगम
- महापाषाण लोग → चेर, चोल & पांड्या
- कुल तीन संगम → (संरक्षण) पांड्या (पांड्या राजाओं ने)

- **प्रथम संगम** → मदुरै में → अगस्त द्वारा संरक्षण
- **दूसरा "** → कपाडपुरम → तोलकाप्पियार द्वारा
- **तीसरा "** → मदुरै

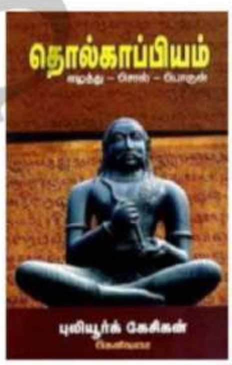

- प्रथम संगम में संगठित साहित्य ×
- दूसरे संगम का साहित्य → तोलकाप्पियम (प्रारंभिक तमिल पाठों में एक)

संगम साहित्य

- कथात्मक पाठ → कहानी के रूप में → मेलकनक्कु → इसमें प्रमुख 8 रचनायें
- उपदेशात्मक (काव्यात्मक) → काव्य के रूप में → किलकनक्कु → इसमें कुल 18 लघु कृतियाँ

- ये हमें प्यार & युद्ध का वर्णन करते → अकम, पुरम (तमिल में)

शिलप्पादिकारम → इलांगो अडिगल (रचनाकार)
↳ कोवलन (राजा), कन्नगी (पत्नी), माधवी (दासी) की कहानी
↳ प्रेम कहानी - कोवलन & माधवी की

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

कन्नगी → पवित्रता & शुद्धता की देवी

मणिमेखलै → कोवलन & माधवी के पुत्री के बारे में
→ सत्तनार (लेखक)

दक्षिण भारत का भूगोल:

भूमि → तिनैस (भूमि का भाग)
तमिल में ↓ 5 भागों में विभाजित

(5) → कुरुन्ची, पलाई, मुल्लाई, मारुतम, नेयताल

तिनै → प्रमुख → मुवेंदर

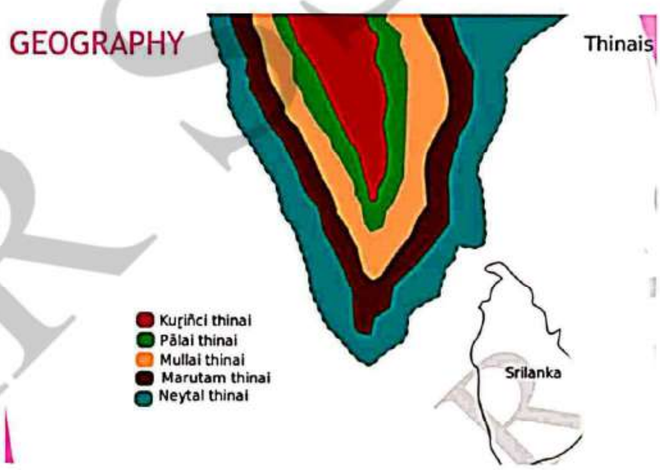

1. कुरुन्ची / कुरिन्सी : शिकार & संग्रहण
2. पलाई : मवेशी चोर & लूटपाट
3. मुल्लई : पशुपालन
4. मारुतम : कृषि
5. नेयताल : मछली पकड़ना & नमक संग्रह

बिन्दुसार : दो समुद्रों के बीच की भूमि का विजेता

अशोक के शिलालेखों में चेर, चोल & पांड्या का वर्णन
↓ ताम्रपर्णि – श्रीलंका के लोगों को
↳ केरलपुत्र कहा गया। (केरल में शासन)

चेर:

- केरल (मुख्य) + तमिलनाडु वाले क्षेत्र में
- राजधानी - वंन्जी / वंजी
- बंदरगाह शहर - मुजिरिस / मुचिरिस और टोंडी
- रोमन के साथ व्यापार
- प्रतीक - धनुष & बाण

• ऑगस्टस मंदिर (रोमन द्वारा निर्मित)

• पुगलुर शिलालेख में इनके बारे में उल्लेख है।

PARMAR SSC
IG - @dheeraj._.jaat

महानतम चेर शासक - सेनगुट्टुवन (लाल चेरा)

कन्नगी की पूजा करते थे।

Raaja Senguttuvan
(Vel Kelu Kuttuvan)
Ruler Of Chera Dynasty

चोल :

↳ चोलमण्डलम (अन्य नाम)

- कोरोमण्डल तट पर शासन → कावेरी डेल्टा
- पांड्यों के उत्तर-पूर्व में शासन
- पेन्नार और वेलार नदियों के बीच
- राजधानी - उरईयूर या पुहर
  - ↳ कावेरीपट्टनम (अन्य नाम)
  - ↳ बंदरगाह शहर
- सूती कपड़ो का व्यापार
- उत्तम / योग्य नौसेना
- सबसे महान शासक - करीकल → वेन्नी का युद्ध लड़ा
  - ↳ चेर + पांड्या को हराया।
- प्रतीक - बाघ

Karikala Cholan
Great Monarch of Early Cholas
Indianconterts.com
Battle of Venni
Grand Anicut

पाड्या :

- तमिलनाडु मे शासन
- राजधानी - मदुरै / मदुरई (वैगाई नदी के तट पर)
- प्रतीक - मछली
- मेगस्थनीज की पुस्तक मे सबसे पहले वर्णन
  - ↳ ये मोतियों के व्यापार के लिये प्रसिद्ध
- रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार
- बंदरगाह - कोरकई

समाज : 3 वर्गों मे विभाजित

- शासक वर्ग - अरासर
- धनी वर्ग - वेल्लालर
- निम्न वर्ग - कदाईसियार
- Vaishiyar → व्यापारी

PARMAR SSC

सरकार का स्वरूप :

- संगम काल में वंशानुगत राजतंत्र शासन का रूप था।

- कालभ्रों (Kalabhras) ने संगम काल के बाद 300 ई० से 600 ई० के बीच तमिल देश पर कब्जा कर लिया, जिसके काल को पूर्ववर्ती इतिहासकारों ने 'अंधकार युग' कहा।

PARMAR SSC

गुप्त साम्राज्य

310 AD - 540 AD

→ संस्थापक - श्री गुप्त
↓ पुत्र
घटोत्कच

उत्तर भारत (UP, बिहार) में शासन

चन्द्रगुप्त -I (319 AD - 334 AD)

- उपाधि - महाराजाधिराज
- विवाह - कुमारदेवी (लिच्छवी राजकुमारी)
- गुप्त संवत की शुरूवात - 320/319 AD
- स्वर्ण सिक्के - दीनार
- सर्वाधिक स्वर्ण सिक्के चलाये - गुप्त शासकों ने

समुद्रगुप्त : (335-380 AD)

- गुप्त साम्राज्य सबसे शक्तिशाली एवं महान शासक
- इनके शासन का वर्णन - प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तम्भलेख)
  - ↓ कभी नहीं हारा
  - ↳ हरिषेण द्वारा लिखित
- 'भारत का नेपोलियन' कहा - VA स्मिथ ने
- उपाधि - कविराज, परमभागवत, सर्व-राज-ओच्छेत्ता (सभी राजाओं को हराने वाला)
  - कविराज ↓ कवियों का राजा
- इसको वीणा बजाते हुये सिक्को पर दर्शाया गया।
- अश्वमेध यज्ञ करवाया।

Gupta Gold Coins

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

चंद्रगुप्त II (380-414 AD):

- अपने भाई रामगुप्त और शक आक्रमणकारी की हत्या कर सत्ता हासिल की।
  - सबसे पहले तांबे के सिक्के पेश किये।
- विवाह - भाई की पत्नि ध्रुवदेवी से
- इसके शासनकाल में उच्च स्तर का वैवाहिक गठबंधन देखा गया
  - पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह → वाकाटक राजकुमार रुद्रसेन II से
- रुद्रसेन II की मृत्यु के बाद प्रभावती गुप्त सिंहासन पर बैठी।
- शकों पर विजय के बाद चाँदी के सिक्के जारी करने वाला प्रथम गुप्त शासक।
- महरौली - लौह स्तम्भ लेख (दिल्ली, कुतुबमीनार परिसर में)

नवरत्न:

1. अमरसिंह
2. धनवन्तरि
3. हरिषेण
4. कालिदास → भारत के शेक्सपियर
5. संकु
6. वराहमिहिर
7. वररुचि
8. वेतालभट्ट
9. क्षपणक

Mehrauli Pillar

फाहियान : चंद्रगुप्त II के शासनकाल में यात्रा करने वाला प्रथम चीनी यात्री
- बंगाल से चीन की यात्रा (चीन की वापसी)

- उपाधि - विक्रमादित्य
- कालिदास की पुस्तकें
  - → अभिज्ञान शाकुन्तलम्
  - → मालविकाग्निमित्र
  - → रघुवंशम्
  - → मेघदूत
  - → कुमार संभवम्
  - → ऋतुसम्हारा

PARMAR SSC

शूद्रक की पुस्तकें → मृच्छकटिका (अन्यनाम- The little clay art)

↳ चारुदत्त & वसंतसेना की प्रेमकहानी

कुमारगुप्त (415- 455 AD):

- चंद्रगुप्त द्वितीय का पुत्र
- हूणों का आक्रमण (मध्य एशिया की जनजाति)
- नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की।

स्कंदगुप्त (455- 467 AD)

- हूणों का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया।
- उपाधि- विक्रमादित्य (स्रोत: भीतरी स्तम्भ लेख)

प्रशासन:

राज्य: → विकेन्द्रीकृत प्रशासन

भुक्ति → (उपारिका के प्रभाव के अंतर्गत) जिलो मे विभाजित
↓
विषय → (विषयपति के प्रभाव मे)
↓
विथिस → (नगरपति के प्रभाव के अंतर्गत)
↓
गांव → (ग्रामिका के प्रभाव के अंतर्गत)

महत्वपूर्ण अधिकारी:

- कुमारमात्य - प्रांतीय अधिकारी
- महादण्डनायक - दंड के लिये जिम्मेदार अधिकारी (न्यायाधीश)
- संधिविग्रहिका - युद्ध & न्याय का अधिकारी

अर्थव्यवस्था :

↳ अत्यधिक संख्या में स्वर्ण सिक्के जारी किये।

कर:

PARMAR SSC

- **भाग** - कृषकों द्वारा भुगतान किया जाने वाला उपज का 1/6 भाग
- **भोग** - राजा को समय-समय पर फल, फूलो की आपूर्ति
- **बाली** - दमनकारी
- **उपरीकर** - अतिरिक्त कर
  (उपरिकरा)

→ **विष्टि** : बंधुआ मजदूरी

→ **सैनाभक्ति** - जब सैना किसी गांव से गुजरती थी तो उसे लोगों द्वारा भोजन दिया जाता था।

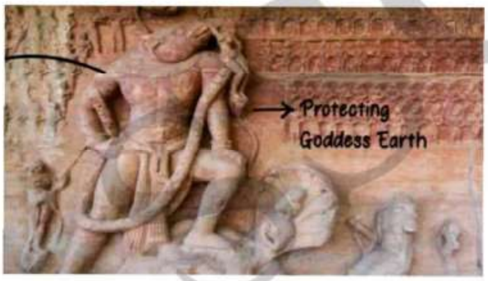

संस्कृति :

→ **वराह की मूर्ति** → महान सुअर
→ चन्द्रगुप्त II द्वारा निर्मित
→ विष्णु का अवतार
→ उदयगिरी, विदिशा, MP में

Dasavatara Temple, Jhansi, Uttar Pradesh

→ **दशावतार मंदिर**
↳ झांसी, UP

→ **भीतरगांव मंदिर** → कानपुर, UP
→ भगवान कृष्ण को समर्पित
→ ईंट का मंदिर (सबसे पुराने मंदिरो मे एक)

Bhitargaon Temple, Kanpur, Uttar Pradesh

गुप्तोत्तर काल

पुष्यभूति / वर्धन वंश :

संस्थापक - पुष्यभूति , थाणेश्वर (हरियाणा)

पुत्र - प्रभाकरवधेन
↓ पुत्र
राज्यवर्धन → (बहन) राज्यश्री → (पति) ग्रहवर्मा
ग्रहवर्मा ↑ कन्नौज शासन
ग्रहवर्मा ↓ देवगुप्ता द्वारा मारा गया, मालवा पर शासन
देवगुप्ता → गठबंधन किया → शशांक
शशांक (उत्तरबंगाल के गौड़ राजा) → मारा → राज्यवर्धन

IG - @dheeraj._.jaat
PARMAR SSC

प्रभाकरवर्धन { बड़ा पुत्र → राज्यवर्धन
छोटा → हर्षवर्धन }

हर्षवर्धन 606-647 AD

राजधानी - कन्नौज

पराजित - ध्रुवसेन II (वल्लभी शासक, गुजरात)

यात्री आया - ह्वेनसांग (जुआंग- जांग) 1400 वर्ष

आयोजित सभायें :

1. कन्नौज - ह्वेनसांग के सम्मान में
2. प्रयाग - हर 5 साल में आयोजित (गंगा, यमुना & सरस्वती के संगम पर)
   ↳ कुम्भ की उत्पत्ति

शैव का उपासक
बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया।

3 पुस्तकें लिखी :

1. रत्नावली
2. नागानंदा
3. प्रियदर्शिका

जीवनी - हर्षचरित → दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा
↳ कादम्बरी

यह पुलकेसिन II द्वारा हारा गया
↳ चालुक्य शासक
↳ नर्मदा नदी के तट पर

सकलोत्तरपथनाथ - चालुक्य शिलालेख में हर्षवर्धन को दी गई उपाधि
↓
उत्तर भारत की भूमि

PARMAR SSC

- सती प्रथा का पहला ज्ञात शिलालेखीय साक्ष्य भानुगुप्त का एरण स्तंभ शिलालेख है, जो 5वीं शताब्दी ई. का है।

  ↓ mp

- गुप्तों के पतन का मुख्य कारण → हूणों का आक्रमण

वाकाटक राजवंश [250-500ई.]:

- सातवाहनों के सामंत
- गुप्त के समकालीन थे।
- ब्राह्मण धर्म का पालन किया लेकिन बौद्ध धर्म को भी संरक्षण दिया।
- भारत के मध्य और दक्षिणी भाग पर शासन किया।
- पुराणों में इनका उल्लेख इस प्रकार किया गया है-
- संस्थापक- विंध्यशक्ति
- अंतिम शासक- प्रभावतीगुप्त
- अजंता गुफाओं में चट्टानों को काटकर बनाए गए बौद्ध विहार और चैत्य का निर्माण वाकाटक राजा हरिषेण के संरक्षण में हुआ था।

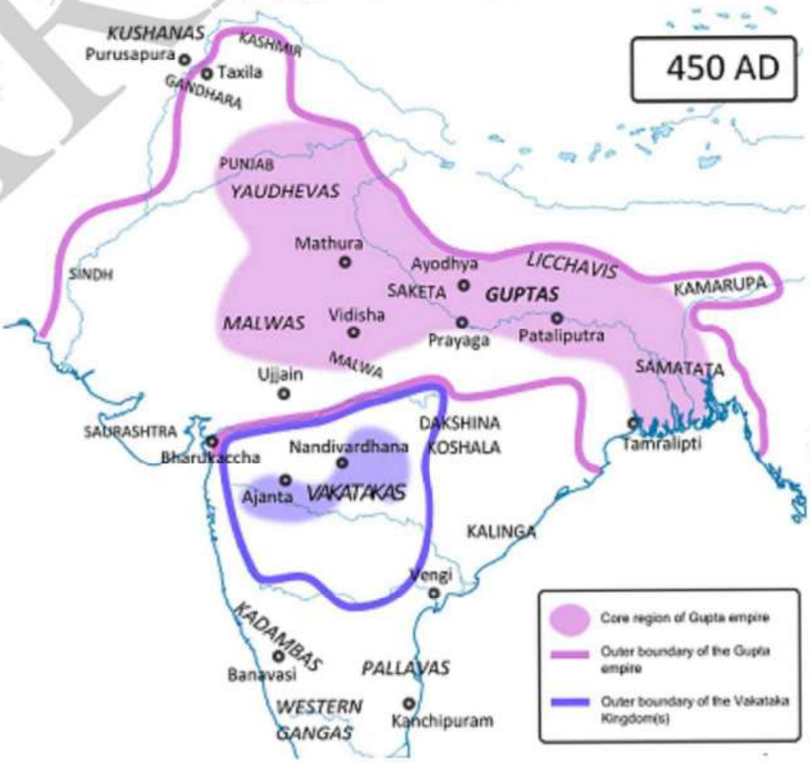

PARMAR SS

चालुक्य वंश

चालुक्य :

3 विशिष्ट राजवंश :

1. बादामी चालुक्य
2. पश्चिमी चालुक्य
3. पूर्वी चालुक्य

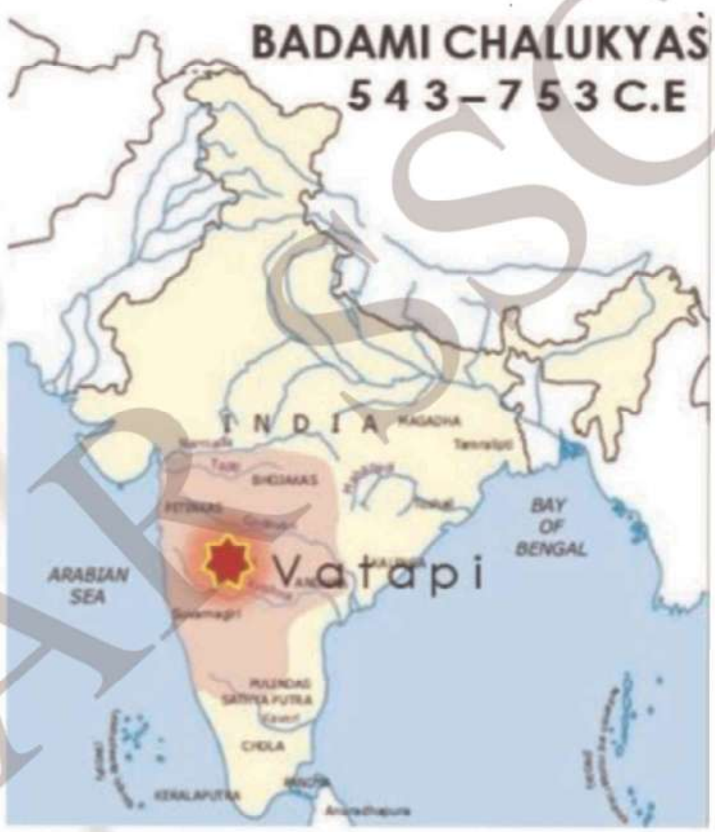

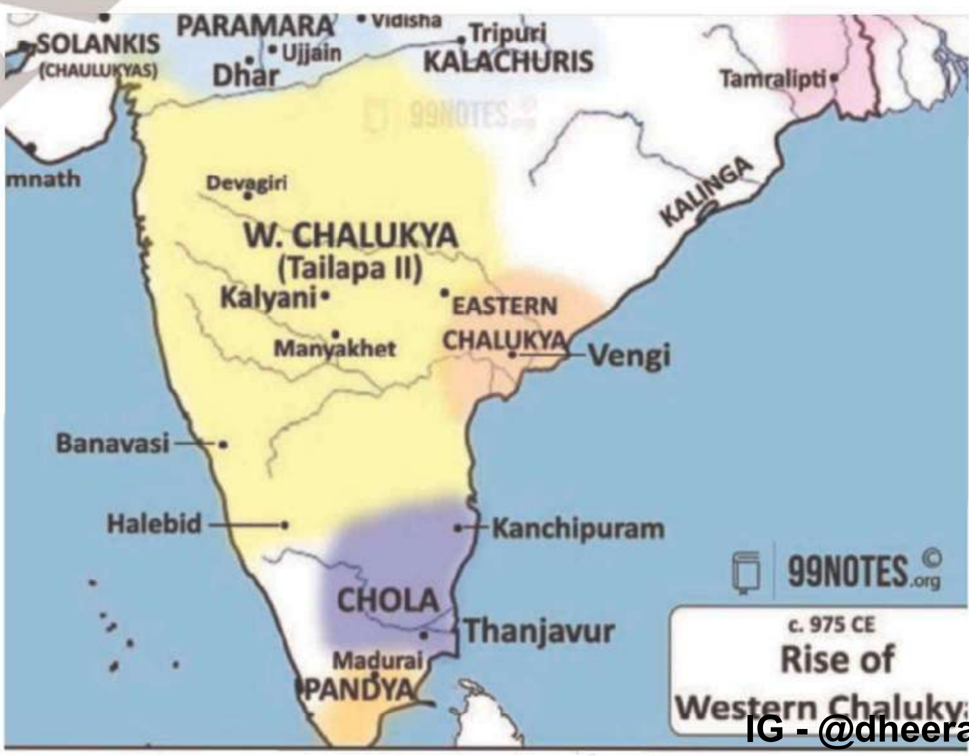

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

बादामी चालुक्य:

पहला शासक - जयसिम्हा (संस्थापक)

राजधानी - वातापी

सबसे शक्तिशाली शासक - पुलकेसिन (543-566AD)

↓

पुत्र - कीर्तिवर्मन (मारा गया)

↓

मंगलेश (भाई) → पुत्र: पुलकेसिन II

(पुलकेसिन II ने मंगलेश को) मारा

पुलकेशिन II (610-642AD)

- अपने वंश मे सबसे महान
- हर्षवर्धन को हराया
- महेन्द्रवर्मन I (पल्लव शासक) को हराया।

→ नरसिंहवर्मन द्वारा पराजित किया गया

→ शीर्षक लिया - वातापीकोंडा (वातापी का विजेता)

विक्रमादित्य I → कीर्तिवर्मन II (परपोता) → पराजित: राष्ट्रकूट

ऐहोल स्तंभ लेख → पुलकेशिन II के बारे मे वर्णन

→ रचयिता - दरबारी कवि रविकृति

चालुक्य वास्तुकला:

शैली - वेसर शैली (नागर + द्रविड़ शैली)

नागर ↓ उत्तर भारत

द्रविड़ ↓ दक्षिण भारत

PARMAR SSC

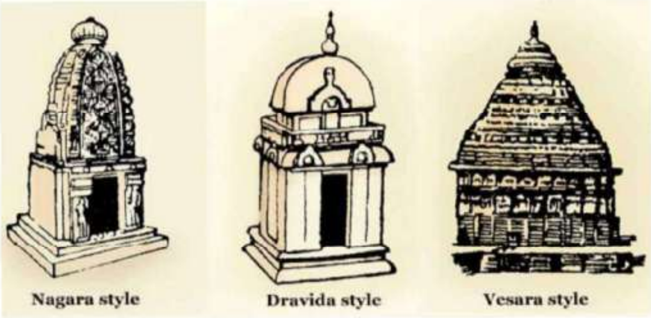

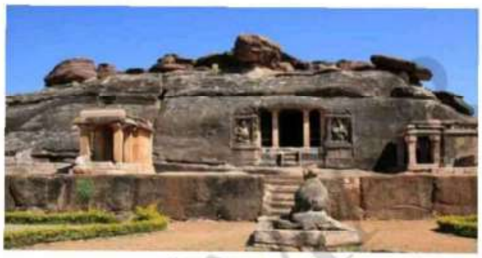
Ravana phadi caves, Aihole

Ladh khan temple, Aihole

- रावड़ फाड़ी गुफा, ऐहोल
- लाढ खान मंदिर, ऐहोल
- दुर्गा मंदिर, अपसाइडल योजना पर निर्मित
- हुचिमल्लीगुडी मंदिर, ऐहोल मंदिर
- पत्तदकल मंदिर → यूनेस्को वैश्विक धरोहर स्थल
  (1987) कुल 10 मंदिर देखे गये
  - 4 नागर शैली
  - 6 द्रविड़ शैली
- विरूपाक्ष मंदिर (द्रविड़ शैली)

Durga temple

Pattadakal temple

विरूपाक्ष मंदिर —बनवाया→ रानी लोकमहादेवी

↓ शिव

↓ लोकेश्वर महादेव मंदिर

→ विक्रमादित्य II ने जब पल्लवों को हराया तब निर्माण।

- संगमेश्वर मंदिर (द्रविड़ शैली)

Galaganatha Temple

IG - @dheeraj._.jaat

पल्लव:

- → संस्थापक - सिम्हाविष्णु
- → महानतम शासक - महेन्द्रवर्मन I

महेन्द्रवर्मन I ↓ पुत्र → नरसिम्हावर्मन → वातापीकोण्डा

नरसिम्हावर्मन → 630 AD-668AD

नरसिम्हावर्मन ↓ द्वारा पुलकेशिन II

पल्लव → कलाभ्र (Kalabhra) के सामंत

→ राजधानी - कांचीपुरम

वास्तुकला :

शोरमंदिर, महाबलीपुरम

शोर मंदिर, महाबलीपुरम

कैलाशनाथ मंदिर → नरसिम्हा वर्मन II → शोर मंदिर

सात रथ मंदिर (शिव) → नरसिम्हा प्रथम → महाबलीपुरम मे पोर्ट शहर का निर्माण करवाया।

राष्ट्रकूट (753-982 AD):

संस्थापक - दंतिदुर्ग

IG - @dheeraj._.jaat

दंतिदुर्ग

↓

पुत्र : कृष्णा I → (बनवाये) कैलाश मंदिर, एलोरा

- एक पत्थर से बने
- मोनोलिथिक पत्थर मंदिर

↓

अमोघवर्ष (814 - 878AD)

- जैन धर्म अपनाया
- राजधानी - मान्यखेत
- कविराजमार्ग पुस्तक
- प्रश्नोत्तर मलिका

↓

इंद्रा III ⟷ प्रतिहारों को हराया

- अजंता और एलोरा (औरंगाबाद, महाराष्ट्र) → हिन्दु, जैन & बौद्ध मंदिर

↓

सातवाहन

↓

राष्ट्रकूट

अजंता की गुफाएं

एलोरा की गुफाएं

IG - @dheeraj._.jaat

कृष्णा I → ध्रुव → गोविंद III

→ नालंदा विश्वविद्यालय : बिहार (ह्वेनसांग और अन्य तीर्थयात्रियों ने वहां अध्ययन करने में समय बिताया।

दशावतार मंदिर → विष्णु

होयसल राजवंश :

कल्याणी के चालुक्यों के सामंत (बाद के चालुक्य)

राजधानी - द्वारसमुद्रम (हालेबिड)

संस्थापक - नृपकाम II

भूमिजा शैली में निर्मित {

सितारे के आकार का मंदिर → चेन्नाकेशव मंदिर → भगवान विष्णु; → विष्णुवर्धन द्वारा निर्मित

होयसलेश्वर मंदिर → 42 वां यूनेस्को विश्व विरासत साइट (बसाडी)

→ भगवान शिव

PARMAR SSC

PARMAR SSC

मध्यकालीन भारत

700-1200 AD	1206-1526 AD	1526-1707 AD
प्रारम्भिक मध्यकाल	सल्तनत	मुगल
↓	↓	↓
गुर्जर प्रतिहार	सल्तनत	मुगल
राजपूत	विजयनगर साम्राज्य	मराठा
पाल	बहामनी सल्तनत	दक्कनी सल्तनत
राष्ट्रकूट		यूरोपीय व्यापारी
चोल		

त्रिपक्षीय संघर्ष

→ कन्नौज त्रिभुज युद्ध के रूप में भी जाना जाता है जो 8 वीं & नौवीं शताब्दी के दौरान पाल, प्रतिहार & राष्ट्रकूट के बीच हुआ।

- गुर्जर प्रतिहार
- पाल
- राष्ट्रकूट

गुर्जर प्रतिहार ↓ संस्थापक - नागभट्ट I

→ सातवाहनों ने ब्राह्मणों को भूमि दान देना शुरू किया।

पाल :

- संस्थापक - गोपाल → ओदंतपुरी का संस्थापक
- पुत्र - धर्मपाल → विक्रमशिला विश्वविद्यालय का संस्थापक
  - ↳ इन्द्रायुद्ध को हराया

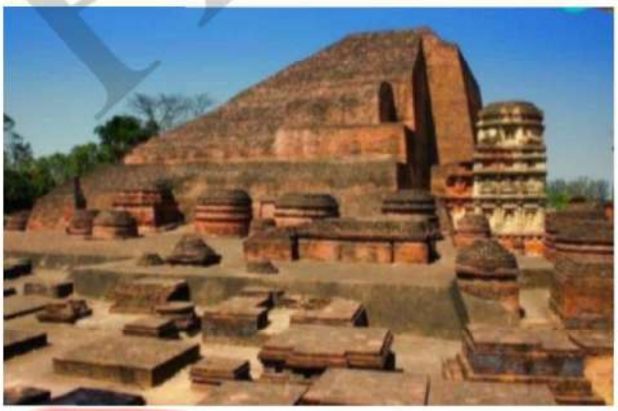

ओदंतपुरी विश्वविद्यालय

विक्रमशिला विश्वविद्यालय

PARMAR SSC
IG - @dheeraj._.jaat

- बंगाल क्षेत्र पर शासन
- बौद्ध धर्म के अनुयायी
- गोपाल → धर्मपाल → देवपाल → महिपाल → रामपाल

गुर्जर प्रतिहार :

संस्थापक - नागभट्ट
राजधानी - कन्नौज।

→ नागभट्ट I

→ मिहिर भोज { अरब विद्वान सुलेमान ने अपने साम्राज्य को लुटेरों से सुरक्षित रखने के लिए गुर्जर-प्रतिहार राजा मिहिर भोज (836- 885 ई०) की प्रशंसा की थी। सुलेमान एक अरब यात्री था जो भोज के शासनकाल के दौरान भारत आया था और उसने भोज की सैन्य शक्ति, धन और कुशल प्रशासन का वर्णन किया था।}

→ महेन्द्रपाल : राजशेखर उनके दरबारी कवि थे।

चोल: (850 - 1280 AD)

संस्थापक : **विजयालय**
→ पल्लवों के सामंत
→ मुत्तरैयार से तंजौर/तंजावुर पर कब्जा किया।
→ देवी निशुम्भसुदिनी के लिये एक मंदिर का निर्माण किया।

परान्तक / परांतक I (873-955 AD) :

- वेल्लोर में पांड्या को हराया।
- राष्ट्रकूट शासक कृष्णा 3 से हारे। → तक्कोलम का युद्ध

↓
रामेश्वरम { विजयी स्तम्भ बनवाया
कृष्णेश्वर मंदिर बनवाया

PARMAR SSC

शासक:

राजराजा I (985- 1014 AD):

- महमूद गजनवी के समकालीन
- त्रिवेंद्रम में चेरों को हराया
- पांडवों को हराया और मदुरै पर विजय प्राप्त किया।
- श्रीलंका पर आक्रमण किया।

नागपट्टिनम में एक बौद्ध विहार का निर्माण कराया।

राजेन्द्र I (1012 AD - 1044 AD): दक्षिण भारत का नेपोलियन

- चेर और पांड्या को पूरी तरह से परास्त किया।
- श्रीलंका पर सम्पूर्ण विजय।
- गंगा पार कर बंगाल के दो स्थानीय राजाओं को हराया।
- उपाधि - गंगैकोंडाचोल
- एक नया शहर गंगैकोण्डचोलपुरम बसाया
- श्रीविजया साम्राज्य और सैलेंद्री (शैलेन्द्र) राजवंश के खिलाफ नौसैनिक अभियान चलाया।

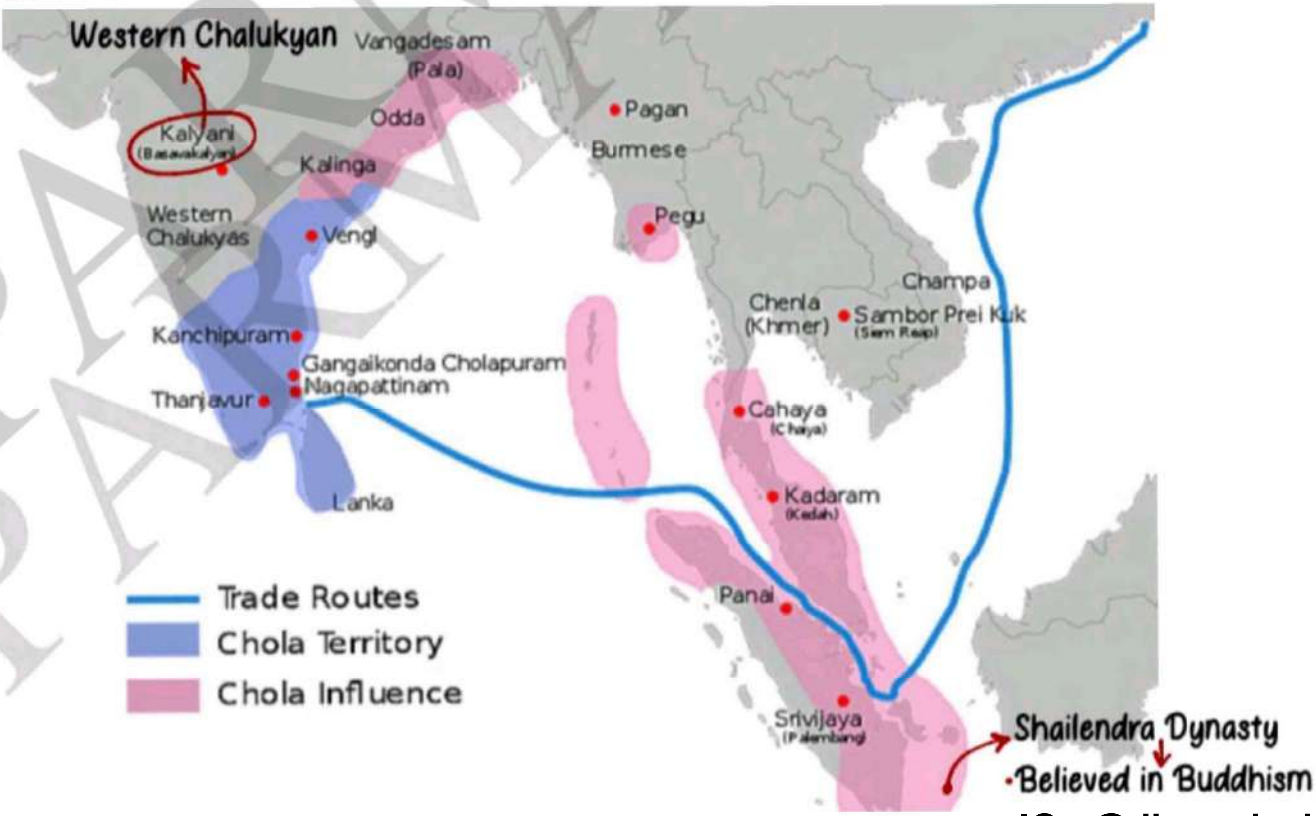

IG - @dheeraj._.jaat

→ चोलों ने कल्याणी के चालुक्यों के खिलाफ लड़ा।

→ 13 वीं शताब्दी के आरंभ में चोल साम्राज्य का पतन हो गया, चोलों का स्थान पांड्यों और होयसलों ने ले लिया, परवर्ती चालुक्यों का स्थान यादवों और काकतीय लोगों ने ले लिया।

यादव ↓ राजधानी - देवगिरी

काकतीय ↓ राजधानी - वारंगल

होयसल ↓ राजधानी - द्वारसमुद्र / हलेबिडु

सितार के आकार के मंदिर के लिये प्रसिद्ध

→ राजा के पास सारे अधिकार थे

→ सलाह देने के लिये मंत्रिपरिषद

→ चोल साम्राज्य निम्न में विभाजित था

↓

मंडलम (प्रांत)

↓ आगे विभाजित

वालानाडु / नाडु

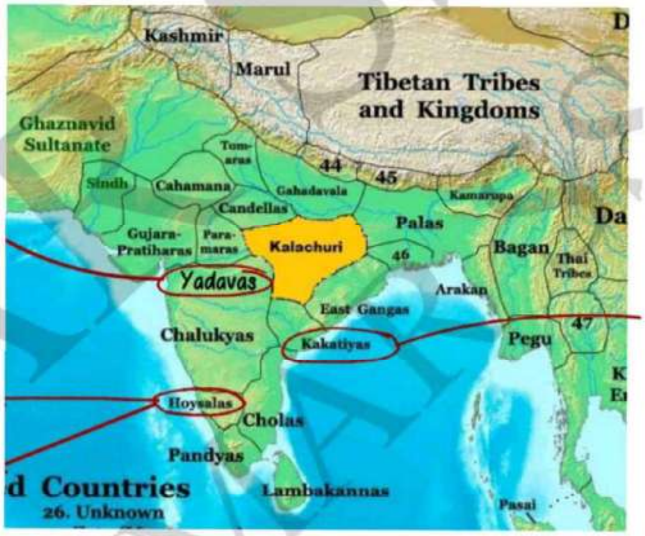

चोल सरकार :

→ चोल स्थानीय / ग्राम सरकार के लिये जाने जाते थे।

↳ विकेंद्रीकृत

2 सभायें :

- उर - आम लोगों की सभा
- सभा - विद्वान ब्राह्मणों की सभा

↳ अग्रहार - ब्राह्मणों की भूमि

→ गांव के मामलों का प्रबंधन एक कार्यकारी समिति द्वारा किया जाता था।

↓ चुनाव

संपत्ती वाले लोग या भूमि का विशेषाधिकार वाले लोग ही चुनाव में भाग

↳ इसका प्रत्येक सदस्य 3 साल के लिये नियुक्त

IG - @dheeraj._.jaat

चोल काल मे भूमि दान:

1. ब्रह्मदेय → ब्राह्मणों को दान दी गई भूमि
2. वेल्लनवगी → गैर- ब्राह्मणों को " " "
3. देवदान → मंदिरों को " " "
4. पल्लीछंदम → जैन समुदाय " " "
5. शालभोग → स्कूलों के रखरखाव के लिये।

वेल्लार- धनी जमींदार

चोल साम्राज्य के दौरान कर:

2 प्रकार
- वेट्टी - बंधुआ मजदूरी, जबरन मजदूरी
- कदमई - भू- राजस्व

महान जीवंत चोल मंदिर → सभी यूनेस्को विरासत में सूचीबद्ध

- बृहदेश्वर मंदिर
  - तंजौर मे
    राजराजेश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता
    निर्माण- राजाराजा I
  - गंगैकोंडचोलापुरम
    राजेंद्र I द्वारा निर्मित
- ऐरावतेश्वर मंदिर
  - राजराजा II द्वारा निर्मित

मंदिर वास्तुकला:

उत्तर भारत	दक्षिण भारत
नागर शैली	द्रविड़ शैली
वक्राकार	पिरामिड आकार के
गर्भगृह- मूर्ति रखने का स्थान	मंडपम- हॉल, घंटी लगी होती
मंडपम- हॉल, घंटी लगी होती	गोपुरम- मुख्य प्रवेश द्वार

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

Temple Architecture

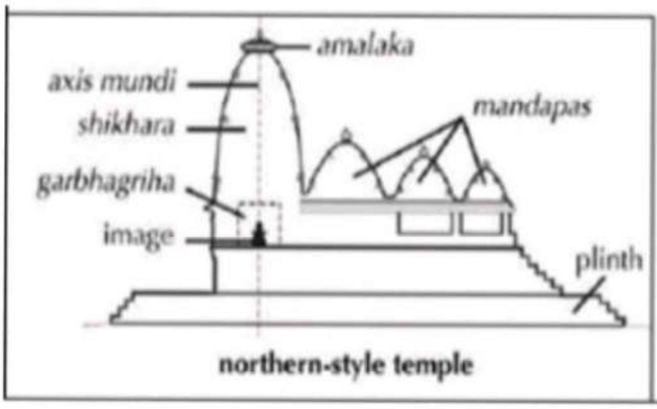

Nagara style

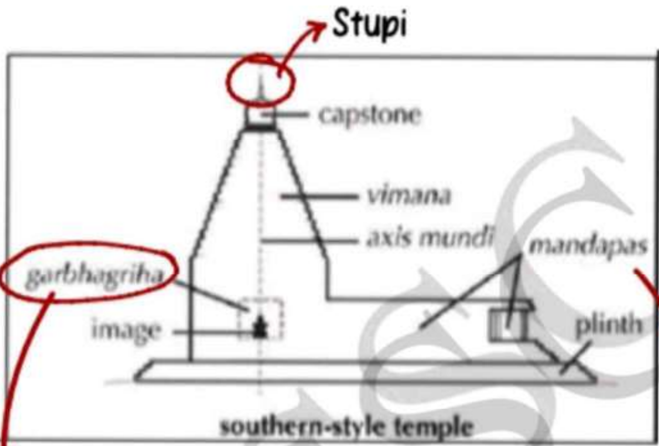

Dravida style

- Chief deity installed here
- Also known as Sanctum

Main entry/ hall where bell is placed

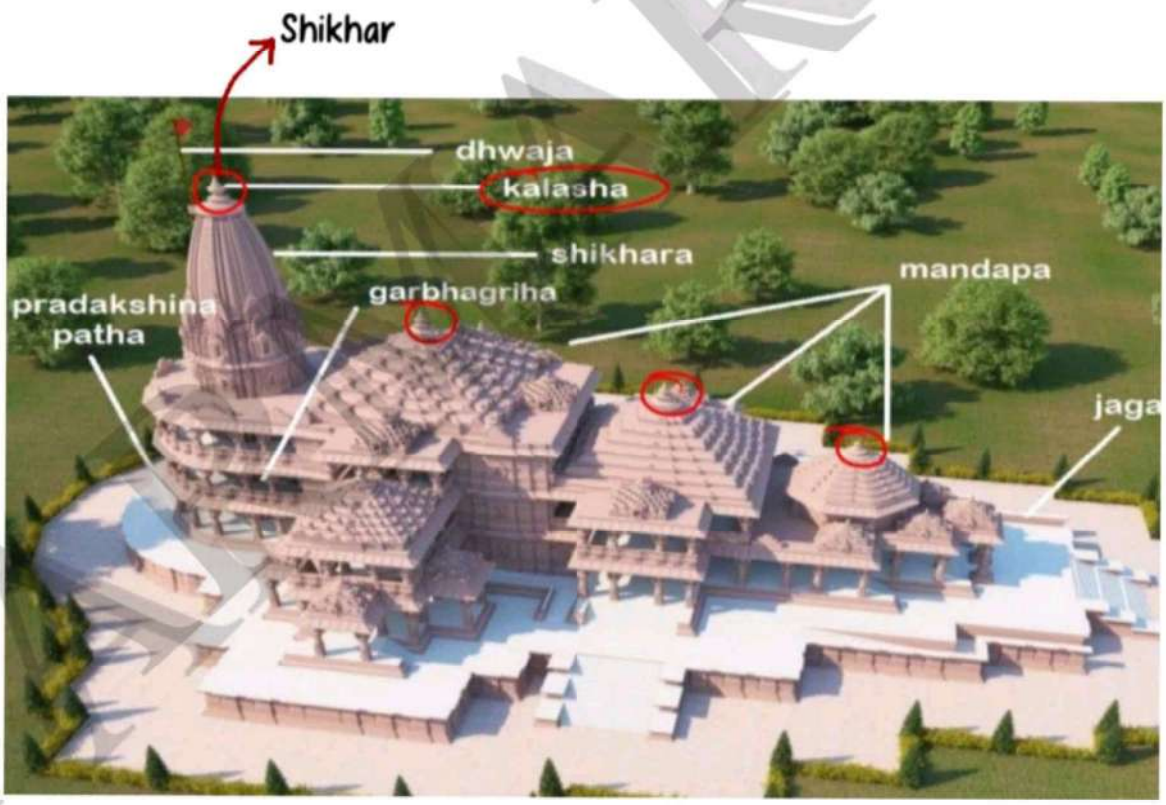

North Indian Style Temple

- Some North Indian style follows Panchayatan style

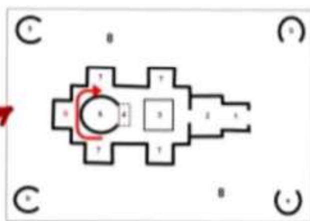

1. Ardha mandapa
2. Mandapa
3. Maha mandapa
4. Antarala
5. Garba griha
6. Pradakshina
7. Transepts
8. Jagati
9. Subsidiary shrines

Plan of Kandariya Mahadeva Temple

PAWAR SSC

→ तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर - कैपस्टोन का वजन - 80टन

Brihadeshwara Temple at Tanjore

→ गंगईकोंडचोलपुरम का शिव मंदिर
- दक्षिण भारत में नंदी को बाहर रखा जाता है।

Shiva Temple at Gangaikondacholapuram

→ कुंभकोणम् का ऐरावतेश्वर मंदिर

Airavateshwara Temple at Kumbakonam

→ मध्यप्रदेश में कंदरिया महादेव मंदिर
- चंदेल शासकों द्वारा निर्मित

Kandariya Mahadeva Temple at Madhya Pradesh

→ हम्पी में विरुपाक्ष मंदिर, कर्नाटक
- चालुक्य वंश द्वारा निर्मित
- वेसर शैली में

Virupaksha Temple at Hampi, Karnataka

→ शिव की नृत्य करती आकृति :
- नटराज, तांडव करते हुये
- कांस्य निर्मित, लॉस्ट वैक्स तकनीक से निर्मित

→ नागरश्रेष्ठी पद → नगर के व्यापारी (मुख्य बैंकर)

→ भिल्लस्वामिन (mp), चोल राजवंश के दौरान एक मंदिर शहर के रूप में विकसित।

→ दक्षिण & उत्तर के क्षेत्र में जो चोल साम्राज्य का हिस्सा बने - पांड्या & पल्लव

PARMAR SSC

IG - @dheeraj._.jaat

उत्तरमेरूर शिलालेख :

तमिलनाडु

- 11वीं शताब्दी के आरंभ में चोल राजा राजेंद्र प्रथम ने एक शिव मंदिर का निर्माण कराया और चालुक्यों से जब्त किये गये सूर्य तिलक आसन से भर दिया।
- चालुक्यों से एक सूर्य आसन, एक गणेश प्रतिमा और एक दुर्गा माँ की कई प्रतिमाएँ, पूर्वी चालुक्यों से एक नंदी प्रतिमा, उड़ीसा के कलिंग से भैरव (शिव का एक रूप) और भैरवी की एक प्रतिमा, और बंगाल के पालों से एक काली माँ की प्रतिमा से मंदिर को भर दिया। } **वृहदेश्वर मंदिर**

PARMAR SSC